दिव्य महाकुंभ हरिद्वार 2021

दिव्य महाकुंभ हरिद्वार 2021

दिव्य महाकुंभ

हरिद्वार 2021

COMMISSIONED BY:
NAMAMI GANGE PROGRAMME,
NATIONAL MISSION FOR CLEAN GANGA, GOVERNMENT OF INDIA
&
THE MELA ADHIKARI,
HARIDWAR, KUMBH 2021, HARIDWAR – 249408
GOVERNMENT OF UTTRAKHAND

WRITTEN, PHOTOGRAPHED, DESIGNED & PUBLISHED BY

CREATIVE CHANNEL MEDIA

CREATIVE CHANNEL MEDIA PVT. LTD.
creative@creativechannel.in
www.creativechannel.in
TEL:- +91-11-28744074
MOBILE:- +91 9818891223

AUTHOR
VISHAL SETHI

DESIGN
VISHAL SETHI, AMITAVA BANERJEE

PUBLISHER
PRINT PRO

EXECUTIVE PUBLISHER
SHAILESH GAHLOT

IMAGE CREDIT
NEERAJ KUMAR, ATUL BOUNTY NARULA, SHAILESH GAHLOT

EDITOR
DIVYANSHU NAITHANI, AAMIR WAMIQ

PROJECT COORDINATOR
RAJ ROY, ANIL KUMAR, RAHUL PANDEY

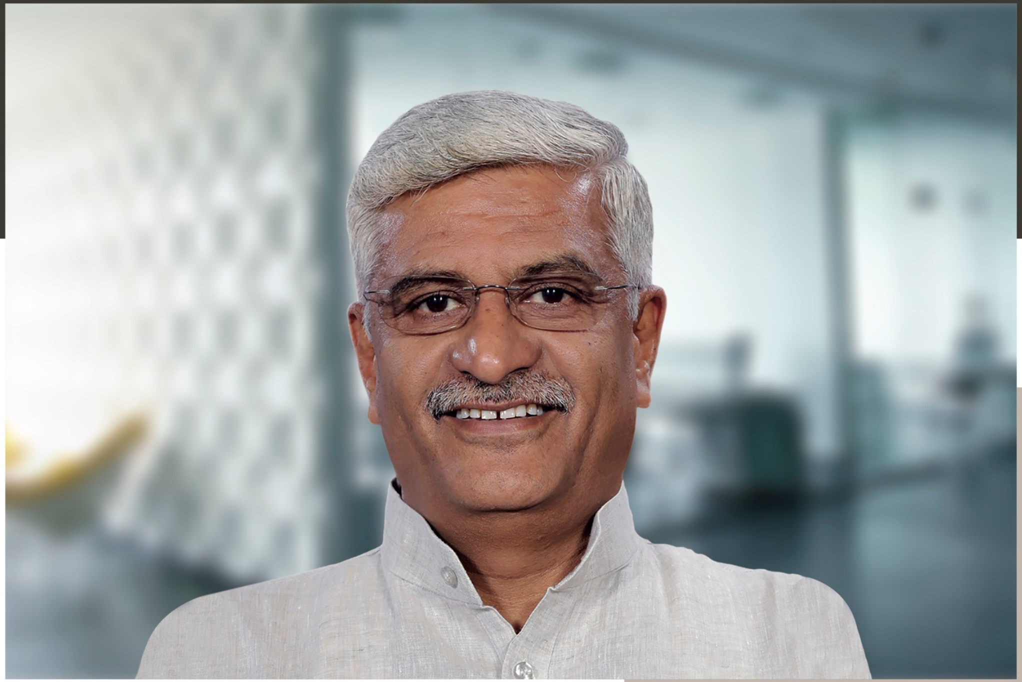

GAJENDRA SINGH SHEKHAWAT

MINISTER FOR JAL SHAKTI GOVERNMENT OF INDIA

Kumbh Mela is a unique example of religion, spirituality and peaceful coexistence, and had fascinated people across; nationalities, beliefs and religious leanings since ages. River Ganga and Kumbh Mela are inseparable. The Divine Mahakumbh: Haridwar 2021 was organised with administrative perfection despite the challenges posed by Covid-19 pandemic. People from all walks of life and from across the globe congregated in Haridwar to take a dip in the holy Ganges.

I would like to congratulate the State Government of Uttarakhand and the Mela administration for having organised such a huge gathering of people with such perfection. The Mela truly lived up to the traditions of a centuries-old heritage. I congratulate all whose sustained efforts made this Kumbh Mela "Swachh and Surakshit." Mela administration was successful in the smooth conduct of the Kumbh 2021 and ensuring implementation of Covid-19 appropriate behaviour and guidelines during the entire tenure of Kumbh 2021.

I am also happy to note that a coffee table book has been published to showcase the grand achievement of organising the Mahakumbh in Haridwar 2021. The book is visually very attractive and captures what the Kumbh traditionally stands for.

I also want to congratulate National Mission for Clean Ganga for expeditiously completing the projects to ensure Nirmal Ganga in the State of Uttarakhand. Millions of devotees and pilgrims taking a holy dip in the sacred waters of Ganga during the Haridwar Kumbh 2021 is a testament of the work being under Namami Gange Programme under the vision and leadership of the Hon. Prime Minister Shri Narendra Modi.

The Government of India is committed to bring River Ganga, our national pride, back to its glory and will continue to work devotedly in that direction.

Gajendra Singh Shekhawat
Minister for Jal Shakti
Government of India

G ASOK KUMAR

IAS, DIRECTOR GENERAL
NATIONAL MISSION FOR CLEAN GANGA

Kumbh Mela is the world's largest congregation of religious pilgrims. It is of immense spiritual significance and reflects the civilizational history of India. Kumbh Mela encapsulates the science of astronomy, astrology, spirituality, ritualistic traditions, social customs and practises. It is a divine tradition unparalleled in the world and brings people from numerous faiths and nationalities together.

The successful execution of the Mahakumbh in Haridwar in 2021 despite Covid-19 challenges is a testament of administrative smoothness in conducting such a huge religious gathering of devotees at one place. It is a matter of considerable satisfaction for National Mission for Clean Ganga (NMCG) that people from all walks of life praised the improved water quality in Haridwar during the Mahakumbh 2021, which is the result of completion of sewerage management projects undertaken as part of Namami Gange Programme. This certainly is a feather in the NMCG's cap.

I am delighted to note that a Coffee Table book 'The Divine Mahakumbh: Haridwar 2021' has been published by the State Government through State Mission for Clean Ganga, which is the implementing arm of NMCG in Uttarakhand. The tone and tenor of the Coffee Table book is awe- inspiring and presents a mesmerizing pictorial treat to readers with some breath-taking panoramic views of River Ganga, Haridwar, gatherings and Sadhus. The book highlights the astrological and mythological significance of the Kumbh and captures the essence and uniqueness of the event with dexterity.

One of the special attractions of the Haridwar Mahakumbh 2021 was "Paint My City" campaign to enhance the beauty and splendour of the mystical city of Haridwar by aesthetically painting the city walls and showcasing the significance of the Kumbh Mela through the hues of mythology. The stories from ancient scriptures were depicted through these paintings on ghats, bridges, ashrams, offices, temples etc. More than 3.75 lakh square feet of wall space was painted by roping-in hundreds of artists. No wonder, the Mahakumbh 2021 is hailed as Sunder, Swachh, Surakshit, Swasth, Structured and Smart Kumbh, which generates a sense of achievement in all of us.

As rightly indexed in the Coffee Table book, 'Kumbh is the celebration of eternal faith' and we, at NMCG, will continue to strive tirelessly to ensure that River Ganga, also intertwined with Kumbh eternally, remains Aviral and Nirmal.

G ASOK KUMAR
IAS, Director General
National Mission For Clean Ganga

नमामि गंगे

हरिद्वार महाकुम्भ 2021

सुंदर स्वच्छ सुरक्षित

United Nations
Educational, Scientific and
Cultural Organization

Intangible Cultural
Heritage

'कुंभ मेला' (अमृत कलश का उत्सव), पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों की सबसे बड़ी शांतिपूर्ण धार्मिक सभा है, जिसमें आने वाले श्रद्धालु पवित्र गंगा नदी में स्नान करते व डुबकी लगाते हैं। श्रद्धालुओं का मानना है कि पवित्र गंगा नदी में डुबकी लगाने से व्यक्ति के पाप धुल जाते हैं, जिससे वह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। लाखों लोग स्वेच्छा से कुंभ स्थल पर आते हैं। मेले में तपस्वी, संत, साधु, महत्वाकांक्षी–कल्पवासी और अन्य आगंतुक सम्मिलित होते हैं। यह उत्सव – प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक – इन प्रमुख भारतीय शहरों में हर चार साल में बारी–बारी से आयोजित किया जाता है, और इसमें जाति, पंथ या स्त्री–पुरुष के भेद के बिना लाखों लोग शामिल होते हैं। हालाँकि मुख्य उपस्थिति अखाड़ों व आश्रमों, धार्मिक संगठनों से संबंधित लोगों, संतों या भिक्षा पर निर्भर व्यक्तियों की होती है। कुंभ मेला देश के आध्यात्मिक संवाद में एक केन्द्रीय भूमिका निभाता है, जो यह दिखाता है कि आम नागरिकों पर इसका प्रभाव कितना मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। इसका आयोजन खगोलविज्ञान, ज्योतिषविद्या, आध्यात्मिकता, अनुष्ठान संस्कारों और सामाजिक व सांस्कृतिक परंपराओं और प्रथाओं के विज्ञान को एक ज्ञानवर्धक अनुभव में बदल देता है। भारत के चार अलग–अलग शहरों में आयोजित किए जाने के कारण इस मेले में सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का मिश्रण दिखाई देता है, जो इसे सांस्कृतिक रूप से विविध उत्सव बना देता है। परंपरा–संबंधी ज्ञान और कौशल का स्रोत प्राचीन धार्मिक पांडुलिपियाँ, मौखिक परंपराएँ, ऐतिहासिक यात्रा वृत्तांत और प्रख्यात इतिहासकारों द्वारा निर्मित ग्रंथ होते हैं। हालाँकि, आश्रमों और अखाड़ों में साधुओं की गुरु–शिष्य परंपरा शायद सबसे अधिक ध्यान देने योग्य विशेषता है, जो कुंभ मेले से संबंधित ज्ञान और कौशल को आगे बढ़ाने और उसकी रक्षा करने के तरीकों को दर्शाती है।

2017 (12.COM) में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में अंकित

CONTENTS

13 कुंभ : सनातन आस्था का उत्सव

53 प्रतीक चिन्ह (लोगो) और परिकल्पना : हरिद्वार कुंभ 2021

65 हरिद्वार कुंभ 2021: ज्योतिषीय रूप से अनोखा

89 हर की पौड़ी : दिव्य द्वार

109 हरिद्वार का परिवर्तन

173 कुंभ का दृश्य

213 आस्था के स्तंभ

249 हरिद्वार कुंभ 2021: अमृत का अमर पात्र

01

कुंभ : सनातन आस्था का उत्सव

कुंभ मेला (अमृत कलश का उत्सव) धार्मिक तीर्थयात्रियों का दुनिया का सबसे बड़ा समागम है। इसमें दुनिया भर के तपस्वी, संत, साधु, कल्पवासी और आगंतुक सम्मिलित होते हैं।

कुं – पृथ्वीम्भागयति दीपयति तेजोवर्द्धनेनेति कुम्भः

समस्त पृथ्वी को अपने प्रभाव से प्रकाशित करने वाले पर्व को कुम्भ कहा जाता है।

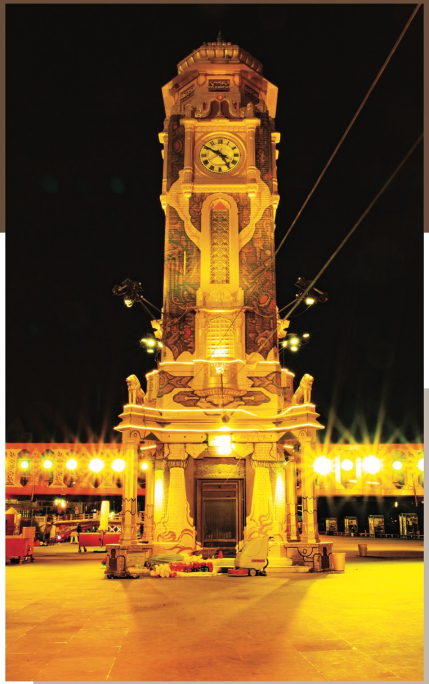

विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों का विशाल जमावड़ा कुंभ मेले को वास्तव में आध्यात्मिकता और आस्था का उत्सव बनाता है। हमारे देश के लोगों के अलावा दुनियाभर से विभिन्न राष्ट्रीयताओं के लोग एक–दूसरे से मिलते हैं और धार्मिक शिक्षाओं, पौराणिक कथाओं, आध्यात्मिकता व गुरु–शिष्य परंपरा में भाग लेते हैं। मेले में एक सरल और कठोर जीवनशैली अपनाते हुए, वे मानवीय बंधन, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और सद्भाव का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

कुंभ मेला एक विशाल दिव्य परंपरा है, जिसका उद्देश्य आध्यात्मिक स्पंदनों को बढ़ाना है, जिसमें अलग–अलग जाति, रंग और तबके के लोग एक ही उद्देश्य के साथ एक स्थान पर एकत्रित होते हैं। कुंभ मेले में होने वाले अनुष्ठान सच्चे साधकों को अपनी दिव्य क्षमता को जगाने और आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे उन्हें मुक्ति का अवसर मिले और वे 'परम सत्य' तक पहुँच सकें।

भारतीय ज्योतिष में कुंभ नामक एक राशि है, जिसके तहत यह उत्सव मनाया जाता है। संस्कृत भाषा में 'कुंभ' का शाब्दिक अर्थ बिना हैंडल वाला घड़ा होता है, और मेला अर्थात् मिलन है। कुंभ मेला भारत के चार पवित्र शहरों – उत्तराखंड के हरिद्वार, महाराष्ट्र के नासिक, मध्य प्रदेश के उज्जैन और उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में बारी–बारी से 12 साल की अवधि में चार बार मनाया जाता है। प्रत्येक 12 वर्षों के बाद उसी स्थान पर 'पूर्ण कुंभ' मेला आयोजित होता है। ऐसे बारह पूर्ण कुंभ मेलों के बाद या 144 वर्षों के बाद, उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 'महाकुंभ मेला' मनाया जाता है।

पौराणिक महत्व

कुंभ मेला दो शब्दों से मिलकर बना है – 'कुंभ' और 'मेला'। कुंभ शब्द अमरत्व के 'अमृत कलश' से लिया गया है। जैसा कि प्राचीन वैदिक शास्त्रों में वर्णित है, देवताओं और राक्षसों के बीच इसी अमृत कलश के लिए युद्ध (समुद्र मथंन) हुआ था। 'मेला' एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ 'इकट्ठा होना' या 'मिलना' होता है। ऐसा माना जाता है कि कुंभ की कुछ बूँदे चार स्थानों – प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिरी थीं।

चन्द्र: प्रश्रवणाद्रक्षां सूर्यो विस्फोटनाद्दधौ।
दैत्येभ्यश्र गुरू रक्षां सौरिर्देवेन्द्रजाद् भयात~ ।।
सूर्येन्दुगुरूसंयोगस्य यद्राशौं यत्र वत्सरे।
सुधाकुम्भप्लवे भूमे कुम्भो भवति नान्यथ ।।

अमृत से भरे कलश को हासिल करने के लिए देवताओं और राक्षसों के बीच हुए युद्ध के समय चद्रंमा ने अमृत को कलश से गिरने से बचाया, सूर्य ने कलश को टूटने से बचाया और देवगुरु बृहस्पति व शनि ने राक्षसों से इंद्रदेव के पुत्र जयंत की रक्षा की। इसलिए, कुंभ का आयोजन उन्हीं तिथियों व उन्हीं स्थानों पर किया जाता है जहाँ कुंभ कलश से अमृत गिरा था।

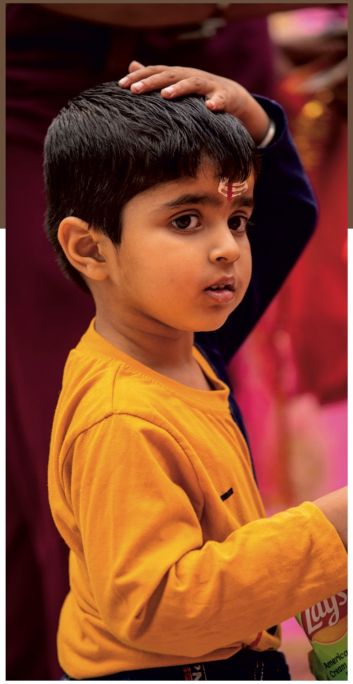

कुंभ मेले के आरंभ के सदंर्भ में कई किवदंतियाँ हैं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध कथा 'समुद्र मथंन' या क्षीरसागर (दूध के सागर) के मथंन से संबंधित है। 'पुराणों' के अनुसार, समुद्र मथंन, देवराज इंद्र को ऋषि दुर्वासा द्वारा दिए गए श्राप का अप्रत्यक्ष परिणाम था, जिस कारण दुनिया में हाहाकार मच गया और पृथ्वी पर सूखा व आपदा आई। इस स्थिति का सामना करने के लिए समुद्र मथंन किया गया। किसानों को राहत देने के लिए देवी लक्ष्मी वर्षा लेकर आईं। इसके बाद गरुड़ नागलोक में छिपाकर रखे गए अमृत कलश को लेकर आए। उन्होंने क्षीरसागर पहुँचने से पहले इस अमृत कलश को चार स्थानों पर रखा, जो बाद में वही स्थान हुए जहाँ कुंभ मेला आयोजित किया जाता है।

महाकाव्यों में वर्णित इस किवदंती से संबंधित एक कथा ये भी है, कि काल के आरंभ से पहले देवताओं और राक्षसों ने क्षीरसागर की दिव्य वस्तुएँ पाने के लिए उसका मथंन किया था। हिन्दू ग्रंथों में वर्णित पाँच पवित्र चोटियों के मंदार पर्वत और नागराज वासुकी की सहायता से किए गए मथंन से धन्वन्तरि और चौदह रत्नों सहित अमृत कुंभ भी निकला, जो अमृत से भरा एक कलश था। इसके बाद, अमृत के वितरण को लेकर देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध हुआ और देवराज इंद्र के पुत्र जयंत एक कौवे का रूप धारण कर अमृत लेकर चले गए। कहा जाता है कि उन्होंने कलश की रक्षा के लिए चद्रंमा, सूर्य, बृहस्पति और शनि की परिक्रमा की थी, किंतु स्वर्ग ले जाते समय कुछ अमृत छलक कर पृथ्वी के चार स्थानों – हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन में गिर गया। चूँकि जयंत को अपनी उड़ान पूरी करने में बारह दिन लगे थे और एक दिव्य दिन की अवधि पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होती है, इसलिए कुंभ मेला इन चार पवित्र स्थानों पर हर बारहवें वर्ष में चक्रीय क्रम में आयोजित किया जाता है।

ज्योतिषीय महत्व

नदियाँ, पहाड़, ग्रह परिवर्तन और विन्यास हिन्दू परंपराओं का एक अभिन्न अंग हैं। ग्रहों की गति समय रेखा को परिभाषित करती है और ग्रहों की प्रत्येक गति की प्रकृति चक्रीय होती है। प्राचीन भारतीय ऋषियों ने हमारे जीवन पर इन ग्रहों के विन्यास के प्रभाव को देखा और अध्ययन किया। तदनुसार, प्राचीन काल से ही रीति–रिवाजों और प्रथाओं को उनके पौराणिक और आध्यात्मिक अर्थों के साथ अपनाकर मनाया जाता आ रहा है।

कुम्भ राशिगते जीवे यद्दिनेशन मशगे रवौ।
हरिद्वारे कृतसंसाननं पुनरावृत्तिवर्जनम्।

जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है और बृहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करता है, तब हरिद्वार शहर में कुंभ उत्सव का आयोजन किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि ऐसी ज्योतिषीय स्थिति में गंगा स्नान करने से व्यक्ति को सभी प्रकार के पापों से मुक्ति मिलती है और अंत में उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कुंभ मेले की तिथियों का निर्धारण नियत पद्धतियों के अनुसार किया जाता है, जिसमें प्रमुख रूप से ग्रहों की स्थिति शामिल होती है। प्रत्येक ग्रह सूर्य के चारों ओर एक चक्कर पूरा करने के लिए एक निश्चित समय लेता है। बृहस्पति ग्रह आमतौर पर लगभग ग्यारह साल और दस महीने (लगभग बारह वर्ष) में सूर्य के चारों ओर अपना चक्कर पूरा करता है, जिसका अर्थ है कि हर बारह साल में बृहस्पति ग्रह उसी स्थिति में चला जाता है। ये हर बारह साल में एक बार आयोजित होने वाले पूर्ण कुंभ मेले की तिथि निर्धारित करने में एक निर्णायक कारक है। विभिन्न ज्योतिषीय राशियों में सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रह की स्थिति उस स्थान को निर्धारित करती है जहाँ कुंभ मेला आयोजित किया जाना चाहिए। जब सूर्य मेष राशि में और बृहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करता है, तब कुंभ मेले का आयोजन हरिद्वार में किया जाता है।

संभवतः हिन्दू पौराणिक कथाओं के सबसे प्रसिद्ध प्रसंगों में से एक और भागवत पुराण में विधिवत वर्णित समुद्र मंथन की कथा में कहा गया है कि आकाशीय पिंडों का पवित्र मार्गरेखा में होना सीधे कुंभ मेले से संबंधित है। अमृत को स्वर्ग तक ले जाने में लगभग 12 दिव्य दिन लगे थे। चूंकि देवताओं का एक दिव्य दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है, इसलिए मानवीय दृष्टि से स्वर्ग की यात्रा 12 वर्षों में परिवर्तित हो जाती है। इसी कारण प्रत्येक बारहवें वर्ष माघ मास की अमावस्या के दिन जब बृहस्पति ग्रह मेष राशि में प्रवेश करता है, तब कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। पौराणिक अध्ययनों से पता चलता है कि कुंभ उत्सव और गंगा नदी का गहरा संबंध है। हालाँकि, गंगा नदी प्रयागराज शहर से होकर बहती है, किंतु नासिक शहर से होकर बहने वाली गोदावरी नदी को गंगा या गोमती गंगा भी कहा जाता है। इसी तरह, शिप्रा नदी (जो उज्जैन शहर से बहती है) को काशी की गंगा की उत्तरी शाखा के रूप में जाना जाता है। यहाँ से शिप्रा नदी पूर्वी शाखा बन जाती है और अंत में गंगा नदी में मिल जाती है।

प्राचीन आध्यात्मिक कुंभ

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अलावा भी, कुंभ मेला लाखों हिन्दू भक्तों के लिए एक तीर्थ स्थल रहा है। ये मेला मुख्य रूप से अनगिनत हिन्दू पुरुषों और महिलाओं के लिए आस्था की धार्मिक यात्रा के रूप में जाना जाता है, जो खुद को पापों से मुक्त करने के उद्देश्य से पवित्र नदी में डुबकी लगाने के लिए आयोजन स्थल पर इकट्ठा होते हैं। इस समय वे देवताओं की पूजा करते हैं, पावन गंगा नदी में पुण्य स्नान करते हैं, सत्संग करते हैं, हिन्दू देवताओं का अभिवादन करते हैं, गरीबों और जरूरतमंदों को भिक्षा देते हैं और आध्यात्मिक रूप से सोचते व आचरण करते हैं।

कुंभ मेला इस बात का प्रतीक है कि ब्रह्मांड की रचना का स्रोत जल है। प्रागैतिहासिक काल से ही हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक के भारतीय शहरों में आयोजित होने वाला ये मेला जटिल ज्योतिषीय गणनाओं पर निर्भर है, जो गणनाएँ उपरोक्त नदी तट स्थलों पर सितारों की मार्गरेखा से संबंधित हैं। हालाँकि प्राचीन भारतीय साहित्य में नदी के किनारे स्नान उत्सवों के कई संदर्भ हैं, फिर भी कुंभ मेले की शुरुआत की सही तिथि आँकना अनिश्चित है। फिर भी, हरिद्वार में होने वाले उत्सव को मूल कुंभ मेला माना जाता है, क्योंकि यह ज्योतिषीय कुंभ राशि के अनुसार आयोजित किया जाता है और इसके 12 वर्षीय चक्र से संबंधित होने के कई संदर्भ हैं। भारत के प्राचीन और मध्ययुगीन काल के दौरान विदेशी आगंतुकों के प्राचीन ग्रंथों और वृत्तांतों में हरिद्वार कुंभ मेले का जिक्र आना भी इसे एक आकर्षक घटना बनाता है।

An artist portrayal of Haridwar's Ganga Ghat from Dr. Kamalkant Budhkar's collection

पूर्व–ब्रिटिश काल

कुंभ मेले की प्राचीनता गुप्त काल (300 ईस्वी से 600 ईस्वी) तक जाती है, जब अधिकांश पुराणों की रचना की गई थी। इसके आरंभ की तिथि तीसरी शताब्दी की एक तारीख को भी बताया जाता है, जब भारत में राशि चक्र के सिद्धांतों की स्थापना की गई थी। इतिहास की पुस्तकों में एक ध्यान देने योग्य बात का उल्लेख है, कि एक चीनी यात्री ह्वेन त्सांग (Hiuen Tsang) ने 643 ईस्वी में कुंभ मेला देखा था।

हरिद्वार को कुंभ मेले के स्थान के रूप में बताने वाले शुरुआती ग्रंथों में खुलासत–उत–तवारीख (1695) और चाहर गुलशन (1759) शामिल हैं। इन दोनों ग्रंथों में 'कुंभ मेला' शब्द का प्रयोग केवल हरिद्वार के मेले का वर्णन करने के लिए किया गया है। हालाँकि अन्य तीन स्थानों पर भी इसी तरह के मेलों के होने का उल्लेख किया गया है, किंतु वे भी हरिद्वार के कुंभ मेले से ही प्रेरित प्रतीत होते हैं।

From Dr. Kamalkant Budhkar's collection

ब्रिटिश काल

ईस्ट इंडिया कंपनी (East India Company) (वो संयुक्त पूँजी कंपनी जो भारत के साथ व्यापार करने के लिए बनाई गई थी और जो बाद में 1757 से 1857 के भारतीय विद्रोह तक ब्रिटिश राजपरिवार की ओर से भारत पर शासन करती रही) के आगमन से पहले तक, कुंभ मेलों का प्रबंधन मुख्य रूप से तपस्वियों के अखाड़ों द्वारा किया जाता था, जो अक्सर अपनी शक्ति और प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए पहले स्नान करने के विशेषाधिकार के लिए लड़ते थे। ये साधु (जो विभिन्न अखाड़ों का हिस्सा थे) व्यापारी और योद्धा दोनों थे। कर एकत्र करने के अलावा, वे नगर–व्यवस्था और न्यायिक कर्तव्यों का पालन भी करते थे। अखाड़ों के तपस्वी धार्मिक प्रवचनों और दार्शनिक व्याख्यानों में व्यस्त रहते थे। उनकी उपस्थिति, उनके प्रवचनों से जुड़ना और उनका आशीर्वाद लेना, आम तीर्थयात्रियों के लिए एक आकर्षण था।

ब्रिटिश शासन के दौरान, तत्कालीन प्रशासन ने कुंभ मेले के बुनियादी ढाँचे में सुधार के प्रयास किए। इसमें स्थानीय पुलिस और तीर्थयात्री संगठनों के प्रमुखों के सहयोग से नई रेलवे लाइनें बिछाना, सड़कों को चौड़ा करना, स्वच्छता की स्थिति में सुधार करना और बड़े स्नान घाटों का निर्माण शामिल था। उन्होंने मेले की पहुँच बढ़ाने, घाटों के पास तीर्थयात्रियों की भगदड़ को रोकने और बेहतर राजस्व प्राप्त करने की आशा जताई। उस समय, स्नान व्यवस्था में अनुशासन से अखाड़ों के बीच हिंसा खत्म हुई।

अनजाने में, अंग्रेजों ने कुंभ मेले को सर्वोच्च पवित्र समारोह के रूप में कानूनी रूप देने और लोकप्रिय बनाने में मदद की। साथ ही, उनका यह भी मानना था कि कुंभ मेला एक राजनीतिक सभा थी जहाँ क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी विचारों ने जन्म लिया।

अखाड़ों का नाटकीय और जोर–शोर से आगमन कुंभ मेलों का प्रमुख दृश्य बन गया। दसियों हजार तपस्वी, कुछ भगवा वस्त्र पहने, कुछ नग्न और राख में ढके हुए, कसकर बँधे हुए बालों की लटों के साथ, घोड़ों या हाथियों पर सुनहरी सीटों के ऊपर सवार होकर कुंभ मेले में आते थे। जब वे पावन जल में प्रवेश करते थे, तब उनके जुलूस के साथ–साथ ढोल–नगाड़े, शंखनाद और घण्टों की ध्वनियाँ मानवजाति में पवित्र तरंगे उत्पन्न करती थीं।

From Dr. Kamalkant Budhkar's collection

हरिद्वार कुंभ मेले का पहला प्रत्यक्षदर्शी ब्रिटिश विवरण 1796 में आयोजित हरिद्वार कुंभ मेले से संबंधित एशियाटिक रिसर्चिज (Asiatick Researches) में छपा कैप्टन थॉमस हार्डविक(Captain Thomas Hardwicke) का लिखा एक लेख था।

ईस्ट इंडिया कंपनी के भूगोलवेत्ता कैप्टन फ्रांसिस रैपर (Captain Francis Raper) ने भी एशियाटिक रिसर्चिज में 1806 के कुंभ मेले का विवरण प्रकाशित किया।

ब्रिटिश सिविल सेवा अधिकारी रॉबर्ट मोंटगोमरी मार्टिन (Robert Montgomery Martinin) की लिखी पुस्तक द इंडियन एम्पायर (The Indian Empire) (1858) में हरिद्वार कुंभ मेले के 1858 के एक वृत्तांत के अनुसार, मेले में आने वाले श्रद्धालुओं में कई जातियों और पंथों के लोग शामिल थे। मेले में धार्मिक भिक्षुओं, पुजारियों और सैनिकों के अलावा, बुखारा, काबुल, तुर्किस्तान, अरब और फारस के घोड़ा व्यापारी भी आते थे। हिन्दू राजाओं के अलावा, सिख शासक, मुस्लिम नवाब और ईसाई मिशनरी भी नियमित रूप से आते थे, जो इस तरह के समारोहों के महानगरीय चरित्र को इस शब्द के प्रचलन में आने से बहुत पहले से चिह्नित करता है।

कहा जाता है कि रूस के ग्रैंड ड्यूक (Grand Dukes) – एलेक्सिस (Alexis) और सर्जियस (Sergius) 1891 में हरिद्वार में हुए कुंभ मेले में आए थे।

सामूहिक रूप से, उत्तरी और पश्चिमी भारत के चार स्थानों में कुंभ का होना भारत के अन्तर्सम्बन्ध का निहित संकेत है। इसके अलावा, ये हमेशा उन विदेशियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है जो भारत की विरासत और संस्कृति का अनुभव करना चाहते हैं। अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक, हरिद्वार कुंभ मेला उत्तर–पश्चिमी भारत में एक प्रमुख व्यावसायिक आयोजन बन गया था।

कुंभ मेले के प्रकार

महाकुंभ मेला	यह केवल प्रयागराज में आयोजित किया जाता है। यह हर 144 साल में या 12 पूर्ण कुंभ मेलों के बाद आयोजित होता है।
पूर्ण कुंभ मेला	हर 12 वर्ष में आयोजित होता है और भारत में मुख्य रूप से 4 कुंभ मेला स्थलों यानी प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में आयोजित किया जाता है। इन 4 स्थानों पर हर 12 साल में बारी–बारी से इसका आयोजन किया जाता है।
अर्ध कुंभ मेला	इसका अर्थ है– आधा कुंभ मेला, और ये भारत में हर 6 साल में केवल दो स्थानों– हरिद्वार और प्रयागराज में आयोजित किया जाता है।
माघ कुंभ मेला	इसे मिनी कुंभ मेला भी कहा जाता है, जो प्रयागराज में हर साल आयोजित किया जाता है। यह हिन्दू पंचांग के अनुसार माघ महीने में आयोजित किया जाता है।

कुंभ मेले का आयोजन स्थल उस अवधि में विभिन्न राशियों में सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति की स्थिति के अनुसार तय किया जाता है।

हालाँकि हिन्दू धर्म में तीर्थयात्रा अनिवार्य नहीं है, फिर भी लाखों श्रद्धालु कुंभ मेले तक पहुँचने के लिए लम्बी और कठिन यात्रा करते हैं और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए जटिल अनुष्ठान करने व गंगा में पवित्र डुबकी लगाने के लिए दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक उत्सव का हिस्सा बनते हैं। कुछ लोग ऐसा इस विश्वास से करते हैं कि ये सदियों पुराने अनुष्ठान उन्हें सांसारिक सफलता प्राप्त करने में मदद करेंगे और कुछ इस विश्वास से कि पौराणिक कथाओं की शिक्षा उनकी आत्मा को शुद्ध करेगी और उन्हें मोक्ष दिलाएगी। वास्तव में, कुंभ मेला कई तीर्थयात्रियों को आध्यात्मिक ज्ञान आत्मसात करने और विभिन्न धार्मिक उपदेशों के माध्यम से ज्ञान लेने का अवसर प्रदान करता है। अपनी मूल जगहों में वापस जाने पर, वे कुंभ मेले में अपने प्रवास के दौरान सीखे गए ज्ञान और सभी मूल्यों का प्रसार करने में सक्षम होते हैं।

विविधता

कुंभ मेला धनी व निर्धन, सामर्थ्यवान व सामान्य, आस्तिक या केवल जिज्ञासु, इन सभी का एक विचित्र संयोजन है। यह शासकों और संतों, मनीषियों और साधुओं, तपस्वियों और संन्यासियों, और सबसे बढ़कर, आम व्यक्ति या शांति चाहने वाले गृहस्थ लोगों का एक जमावड़ा है। अपनी पृष्ठभूमि, जाति या सम्प्रदाय की विविधता के बावजूद, लोग एक तीर्थयात्री की सच्ची भावना में गंगा के उसी पवित्र जल को साझा करने के लिए साथ आते हैं, और हर व्यक्ति उसी सामूहिक चेतना में योगदान देता है जिसमें लाखों विचार एक साथ आते हैं।

कुंभ मेले में समाज के सभी वर्गों से श्रद्धालु आते हैं – चाहे वो 'साधना' का अभ्यास करने वाले और आध्यात्मिक अनुशासन के कठोर मार्ग का पालन करने वाले संत और नागा साधु हों, अपना एकांत त्याग कर केवल कुंभ मेले के समय ही सभ्यता की ओर आने वाले सन्यासी हों, आध्यात्मिकता की खोज में आए साधक हों, या हिन्दू धर्म में विश्वास करने वाले आम लोग हों। कुंभ मेले के दौरान कई समारोह होते हैं – हाथी की पीठ, घोड़ों और रथों पर अखाड़ों का 'पेशवाई' नामक पारंपरिक जुलूस, गंगा में शाही स्नान के दौरान नागा साधुओं की चमकती तलवारें और अनुष्ठान, और कई अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ जो लाखों तीर्थयात्रियों को कुंभ मेले में भाग लेने के लिए आकर्षित करती हैं।

कुंभ मेला प्रशासन के नेतृत्व में संत, तपस्वी, कल्पवासी, धार्मिक समूह व संगठन, तीर्थयात्री, पर्यटक, आगंतुक, शहर के निवासी, राज्य व केन्द्र सरकार के विभाग, नगर योजनाकार, परियोजना प्रबंधन सलाहकार व विशेषज्ञ, विक्रेता, कार्यक्रम योजनाकार, सुरक्षा व स्वास्थ्य कर्मी, भारतीय सेना, गैर–सरकारी संगठन, स्वयंसेवी, सफाई कर्मचारी और अन्य सहायक अधिकारीगण संसार के सबसे भव्य समारोह में भाग लेते हैं।

02

सुंदर स्वच्छ सुरक्षित

प्रतीक चिन्ह (लोगो) और परिकल्पना : हरिद्वार कुंभ 2021

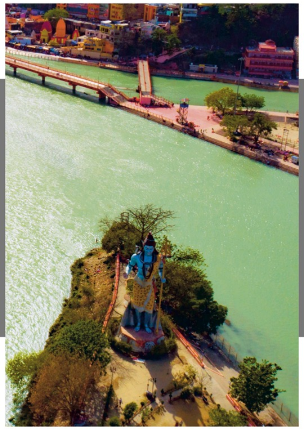

हरिद्वार कुंभ 2021 का प्रतीक चिन्ह (लोगो) कुंभ की आत्मा – 'आध्यात्मिकता', 'विश्वास' और 'परंपरा' को दर्शाता है। एक हल्के पीले ग्लोब में बना यह लोगो निम्न मूर्त प्रतीकों को दर्शाता है।

कुंभ (कलश)

पौराणिक कुंभ (अमृत का घड़ा) जिसे देवता समुद्र मंथन के दौरान असुरों की पकड़ से बाहर निकालते हैं।

लहरें जो सबसे पवित्र और पावन गंगा नदी का प्रतीक हैं। हिन्दू धर्म की सदियों पुरानी मान्यता के अनुसार, कुंभ मेले के मंगल दिनों में पवित्र गंगा में स्नान करने से पुनर्जन्म के अंतहीन चक्र से मुक्ति मिलती है।

त्रिशूल

शिव का त्रिशूल सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण को हटाता है। यह दर्शाता है कि शिव ही निर्माता, पालनकर्ता और संहारक हैं।

मुख्य विषय 'सुंदर स्वच्छ सुरक्षित' इस समारोह के महत्व को समाहित करता है और एक सुंदर, स्वच्छ और सुरक्षित हरिद्वार कुंभ 2021 के आयोजन के लिए उत्तराखंड सरकार के संकल्प और दृष्टि को दर्शाता है।

कई बार कल्पना सामान्य तर्क से परे हो जाती है। कुंभ मेला इसका आदर्श उदाहरण और आविर्भाव है कि कैसे शहरी नियोजन, सार्वजनिक स्वास्थ्य, व्यापार और धार्मिक अभिव्यक्ति के असंख्य मुद्दे किसी शहर में एक नदी के किनारे को लाखों तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के घर में बदल देते हैं।

2021 के हरिद्वार कुंभ के लिए उत्तराखंड सरकार ने लाखों संतों और अनुयायियों को स्वच्छता और सुरक्षा के साथ विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करके हरिद्वार शहर सहित पूरे कुंभ मेला क्षेत्र को सुशोभित करने का एक अनोखा मिशन पूरा किया।

03

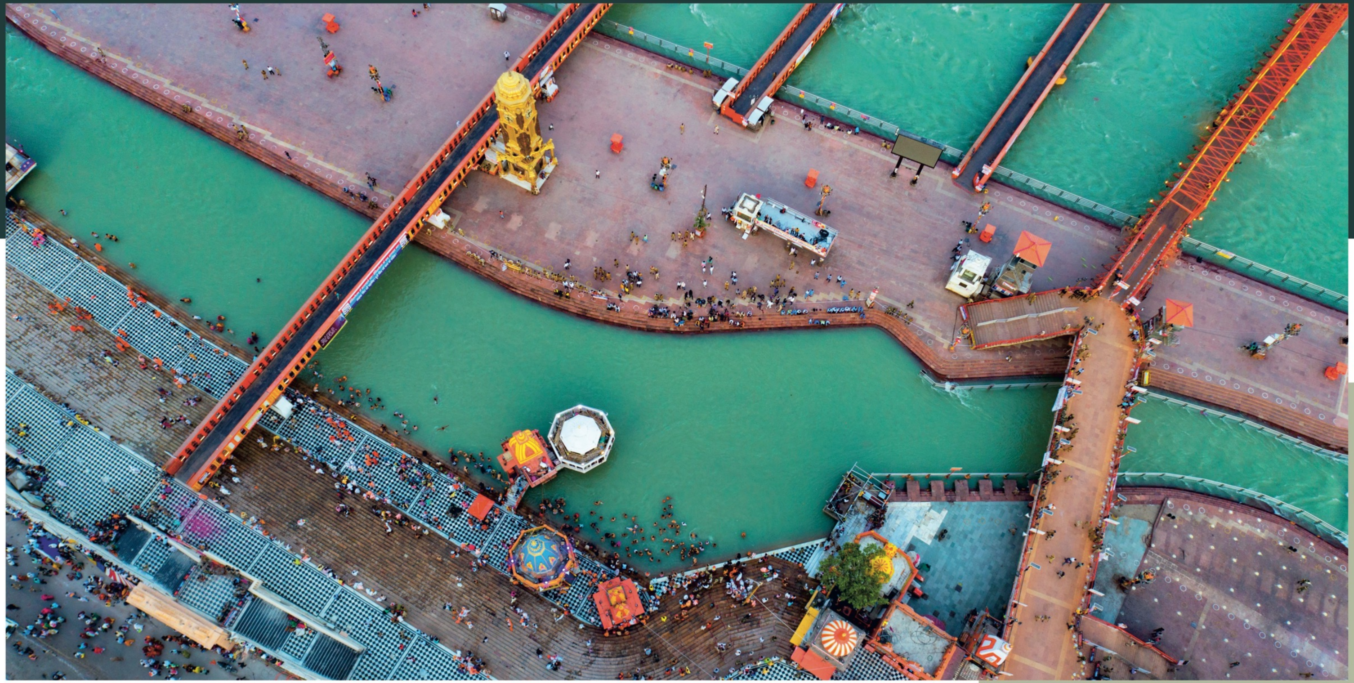

हरिद्वार कुंभ 2021: ज्योतिषीय रूप से अनोखा

83 साल बाद 11वें साल में आयोजित

कुंभ मेला खगोलविज्ञान, ज्योतिषविद्या, आध्यात्मिकता, अनुष्ठान संस्कारों और सामाजिक व सांस्कृतिक परंपराओं और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है, जो इसे ज्ञान में बेहद समृद्ध बनाता है।

2021 का हरिद्वार कुंभ अपने ज्योतिषीय महत्व के कारण अद्वितीय था और इसे हरिद्वार में अपनी तय अवधि से एक साल पहले आयोजित किया गया था, क्योंकि सूर्य ने 2022 के बजाय 2021 में मेष और कुंभ राशि में प्रवेश किया और इस भव्य आयोजन को विचित्र और मंगलकारी बना दिया, जो कुंभ के इतिहास में मात्र दूसरी बार हुआ है। इससे पहले ऐसा 83 वर्ष पहले 1938 में हुआ था। कुंभ हरिद्वार 2021 के लिए अमृत योग 12वें वर्ष में उपलब्ध ना होकर 11वें वर्ष में हो रहा था, और इसलिए अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद और कुंभ मेला प्रशासन ने हरिद्वार कुंभ का आयोजन वर्ष 2021 में करने का निर्णय लिया।

शुरुआत में, यह निर्णय लिया गया था कि 2021 का हरिद्वार कुंभ 14 जनवरी को मकर संक्रांति पर शुरू होगा और अप्रैल के अंत तक जारी रहेगा। लेकिन, कोविड–19 महामारी के कारण, यह अपने सामान्य साढ़े तीन महीने के समय के बजाय केवल 30 दिनों (1 अप्रैल से 30 अप्रैल तक) के लिए आयोजित किया गया था।

हरिद्वार कुंभ 2021 की उपलब्धियां

आस्था दीप (गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स)

हरिद्वार कुंभ 2021 के दौरान मेला प्रशासन ने मेला अधिकारी श्री दीपक रावत के करकमलों से 13 अप्रैल 2021 को विश्व के सबसे बड़े दीप की स्थापना कराई।

तेल के इस विशाल दीपक की क्षमता 2,247 लीटर थी और इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है।

तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने के लिए इस विशाल दीपक को हर की पौड़ी के पास आस्था पथ पर स्थापित किया गया था। कुंभ मेले की पूरी अवधि के दौरान, यह दीपक लगातार प्रज्वलित रहा और तीर्थयात्रियों के आकर्षण का केन्द्र बन गया। कुंभ मेले के दौरान 'कोरोना वारियर्स' द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए, उत्तराखंड सरकार ने यह दीप उन लोगों को समर्पित किया जिनके अथक प्रयासों से महामारी के खतरे के बावजूद 2021 के हरिद्वार कुंभ का आयोजन कुशलतापूर्वक सफल हुआ।

हरिद्वार

मानव श्रृंखला द्वारा बनाया गया मास्क (इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स)

कोविड–19 के कारण 2021 के हरिद्वार कुंभ की कम अवधि और भक्तों के लिए लागू किए गए सख्त दिशानिर्देशों ने हरिद्वार में बड़े पैमाने पर होने वाले कुंभ मेले के समारोह को प्रभावित किया। यह प्रयागराज कुंभ के दौरान देखी गई रिकॉर्ड तोड़ भीड़ का समय नहीं था। फिर भी, 7 अप्रैल 2021 को देश ने कुंभ की भव्यता का एक उदाहरण देखा।

कोविड महामारी के बीच दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक कुंभ मेले का आयोजन करने के लिए पुलिस और अर्धसैनिक बल के जवानों ने मास्क के आकार की एक विशाल मानव श्रृंखला बनाई। महामारी से जन्मीं चुनौतियों के बावजूद हरिद्वार कुंभ 2021 को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए 16,000 से अधिक पुलिसकर्मी, PAC, CISF, CRPF, ITBP के जवान, Homeguard और PRD कांस्टेबल अपना संकल्प और प्रतिबद्धता जताने के लिए एक मास्क के रूप में खड़े थे।

कुंभ मेले के इतिहास में पहली बार आयोजित हुई इस घटना ने इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में जगह बनाई। मेला आईजी श्री संजय गुंज्याल ने पुलिस और अर्धसैनिक बलों के जवानों को यह शपथ भी दिलाई कि यह सुनिश्चित किया जाए कि एक महीने तक चलने वाला यह समारोह कुशलतापूर्वक संपन्न हो। इस पहल का उद्देश्य "सुरक्षित कुंभ और सतर्क पुलिस" का संदेश देना था।

शंखनाद के साथ उद्घाटन

हरिद्वार में कुंभ मेले का मुख्य स्थल हर की पौड़ी में स्थित ब्रह्मकुंड है, जहाँ हजारों तीर्थयात्री और संत जुटते हैं और उत्सव शुरू होता है। माना जाता है कि भगवान विष्णु ने वैदिक काल में हर की पौड़ी में ब्रह्मकुंड का भ्रमण किया था। ऐसा माना जाता है कि यह वही स्थान है जहां गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदानों में प्रवेश करती है।

4 अप्रैल 2021 को श्री गंगा सभा और कुंभ मेला प्रशासन ने विभिन्न अखाड़ों के संतों के साथ हर की पौड़ी में 2021 के हरिद्वार कुंभ की शुरुआत की घोषणा की (हालाँकि आधिकारिक तौर पर, 2021 का हरिद्वार कुंभ इससे पहले 1 अप्रैल 2021 से ही शुरू हो चुका था)। इस अवसर पर उस समय के मुख्यमंत्री श्री तीरथ सिंह रावत, मुख्य सचिव श्री ओम प्रकाश, मेला अधिकारी श्री दीपक रावत और कुंभ मेला आईजी श्री संजय गुंज्याल उपस्थित थे। जब सैकड़ों आचार्यों, संतों और सन्यासियों ने एक साथ अपना शंख बजाया और मंत्रोच्चार किया, तो पूरा मेला क्षेत्र दिव्य ध्वनियों से गूंज उठा। 'शंखनाद' के बाद हर की पौड़ी पर 'महा आरती' की गई।

हरिद्वार कुंभ मेला 2021 में स्थान की बाधाओं की चुनौतियां

कुंभ मेला प्राचीन भारतीय संस्कृति का विश्व का सबसे बड़ा उत्सव है। कुंभ मेला हमेशा से ही तीर्थयात्रियों के जनसमूह और संचालन की बड़ी चुनौतियों का पर्याय रहा है, और गंगा नदी के किनारे छोटी घाटें होने के कारण इसे हरिद्वार के दिव्य शहर में आयोजित करना और भी कठिन हो जाता है। साथ ही, परंपरा के अनुसार, चारों शाही स्नान सहित सभी प्रमुख कार्यक्रमों का आयोजन हर की पौड़ी के ब्रह्मकुंड में किया जाना था, जिसे हरिद्वार और गंगा का सबसे पवित्र और प्राचीन घाट माना जाता है। कुंभ मेला प्रशासन के लिए भारी भीड़ का प्रबंधन करना और इतने छोटे से क्षेत्र में सभी व्यवस्थाओं को संभालना, विशेष रूप से एक महामारी के दौरान, बहुत चुनौतीपूर्ण होने वाला था।

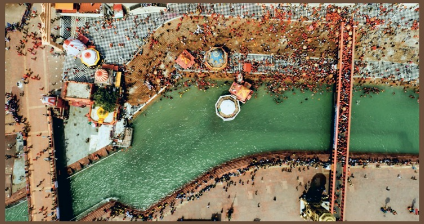

हालाँकि, कुंभ मेला प्रशासन ने इस बड़ी चुनौती पर कुशलता से विजय पाई और कुंभ मेले में भीड़ को सीसीटीवी कैमरों के एक नेटवर्क से प्रभावी निगरानी के माध्यम से लागू किए गए सामाजिक दूरी के मानदंडों के अनुसार प्रबंधित किया। कुंभ मेले के लिए गंगा के दोनों किनारों पर कुंभ मेला प्रशासन ने 20 किलोमीटर की दूरी तक 107 नए घाटों का निर्माण किया था। साथ ही कुंभ के दौरान हरिद्वार के घाटों से भीड़ को कम करने के लिए हरिद्वार के पास चंडी घाट नामक एक किलोमीटर लम्बा एक नया घाट बनाया गया था।

विशेष शुभ दिनों और शाही स्नान के दिनों के दौरान कुंभ मेला प्रशासन ने श्रद्धालुओं को समूहों में बाँटकर और स्नान के लिए एक क्रम में अनुमति देकर हर की पौड़ी में भीड़ का प्रबंधन किया, और इस समय स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए भीड़ के आने और जाने के रास्तों को अलग–अलग दिशाओं में रखा। इस योजना और उसके क्रियान्वयन ने सभी प्रमुख कार्यक्रमों और शाही स्नान के सफलतापूर्वक आयोजन में मदद की।

कोविड के दौरान कुंभ

2021 के हरिद्वार कुंभ के दौरान सरकार का सबसे अधिक ध्यान श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर था। प्रशासन को कानून व्यवस्था, लापता बच्चों, भगदड़, दुर्घटनाओं, डूबने की घटनाओं, यातायात प्रबंधन और तीर्थयात्रियों के लिए सुरक्षित स्नान सुविधाओं सहित विभिन्न सामान्य चुनौतियों का प्रबंधन सुनिश्चित करना था। लेकिन इस बार, स्थिति पूरी तरह से अलग थी – क्योंकि इस बार खतरा महामारी का था।

कुंभ मेला प्रशासन शुरू से ही इस बात को लेकर चौकन्ना था कि कोविड–19 उपयुक्त व्यवहार का सख्ती से पालन सुनिश्चित करना होगा। शुरुआत से ही, भीड़ प्रबंधन के लिए कोविड–19 उपयुक्त व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए फरवरी 2021 तक एक व्यापक निगरानी प्रणाली लागू की गई थी। 2021 के हरिद्वार कुंभ में आने वालों के लिए निगेटिव RT-PCR रिपोर्ट अनिवार्य कर दी गई थी।

यह ध्यान में रखते हुए कि कुंभ मेले में साधुओं सहित लाखों श्रद्धालुओं को भाग लेना था, कुंभ मेला प्रशासन ने भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों के अनुपालन के लिए कोविड–19 के दिशानिर्देशों को लागू किया, जिसका पालन करना कुंभ मेले में आने वाले सभी भक्तों और पर्यटकों के लिए अनिवार्य था।

प्रशासन ने 2021 के हरिद्वार कुंभ की पूरी अवधि के दौरान हजारों स्वास्थ्य और स्वच्छता कर्मियों के साथ–साथ स्वयंसेवियों को तैनात करते हुए प्रत्येक तीर्थयात्री के मास्क और स्वच्छता के लिए विशेष व्यवस्था की थी। जब 2021 के हरिद्वार कुंभ की तैयारी चल रही थी, तब वैश्विक कोविड–19 महामारी का कोई प्रकोप नहीं था। कोरोना के प्रकोप और उसके कारण लगने वाले लॉकडाउन से कुंभ मेले की तैयारियों की गति में कुछ कमी आई थी, लेकिन जल्द ही प्रशासन ने सभी कोविड प्रोटोकॉल का पालन कर लिया।

मेला प्रशासन ने तीर्थयात्रियों के लिए 150 बेड का एक जनरल अस्पताल स्थापित किया था। प्रशासन ने पूरे कुंभ मेला क्षेत्र में और हरिद्वार शहर में तीर्थयात्रियों को कोविड प्रोटोकॉल समझाते हुए दीवारों पर साइन बोर्ड और भित्तिचित्र (graffiti) लगाए थे। साथ ही, पूरे कुंभ मेला क्षेत्र में साउंड सिस्टम लगाए गए थे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि महामारी से संबंधित आवश्यक जानकारी और सावधानियों से अवगत कराया जाए।

कुंभ मेला उत्सव में शाही स्नान का अत्यधिक महत्व है और ज्योतिषीय गणना के अनुसार 2021 के हरिद्वार कुंभ के दौरान चार शाही स्नान निर्धारित किए गए थे। आमतौर पर, शाही स्नान के दौरान संत समाज और अखाड़ों के प्रमुख हाथी, घोड़े, ऊँट, पालकी, रथ और वाहनों के काफिले के एक विशाल जुलूस में हर की पौड़ी घाट (नदी तट) तक पहुँचते हैं। लेकिन महामारी को देखते हुए, सभी अखाड़ों और संत समाज ने 27 अप्रैल (चैत्र पूर्णिमा) को अंतिम शाही स्नान के लिए कोविड मानदंडों का पालन किया और गंगा में पवित्र डुबकी लगाने के लिए वह सीमित वाहनों के साथ पहुँचे। संतों ने न केवल शारीरिक दूरी का पालन किया, बल्कि मास्क भी पहना, जिससे जनता को स्पष्ट संदेश गया कि सभी को कोविड संबंधी नियमों का पालन करने की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के महासचिव, स्वामी नरेंद्र गिरी ने कहा कि पहले से की गई तैयारियों के कारण हरिद्वार कुंभ पर कोरोना का असर नहीं पड़ा और कुंभ जैसा भव्य आयोजन सभी सुरक्षा प्रोटोकॉल के साथ करने के लिए मेला प्रशासन को बधाई दी.

उत्तराखंड सरकार के लिए 2021 का हरिद्वार कुंभ केवल लाखों लोगों की आस्था और भक्ति का तीर्थ ही नहीं बल्कि आगंतुकों की सुरक्षा और बचाव का एक कठिन कार्य भी था, जिससे ये लोक प्रशासन के इतिहास में इतने बड़े पैमाने पर हुआ सबसे चुनौतीपूर्ण आयोजन बन गया। 2021 का हरिद्वार कुंभ अद्वितीय मानव प्रयास का एक आदर्श प्रमाण है जिसे अपने अनुकरणीय प्रबंधन, वैभव और भव्यता के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

2021 के हरिद्वार कुंभ के दिशा–निर्देश स्पष्ट थे: मास्क और सैनिटाइजर पर विशेष ध्यान देने वाला एक सुंदर, स्वच्छ और सुरक्षित मेला, हरिद्वार में प्रवेश की अनुमति देने से पहले

तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की स्वास्थ्य जाँच और आपात स्थिति में पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यवस्था।

04

हर की पौड़ी : दिव्य द्वार

हरिद्वार उन चार स्थानों में से एक है जहाँ हर बारह साल में कुंभ मेला और हर छह साल के बाद अर्ध कुंभ का आयोजन किया जाता है। कहा जाता है कि हर की पौड़ी के ब्रह्मकुंड में अमृत की बूँदें गिरीं थीं और कुंभ मेले के दौरान ब्रह्मकुंड में डुबकी लगाना बहुत शुभ माना जाता है। मान्यता है कि भगवान विष्णु ने हर की पौड़ी की ऊपरी दीवार में स्थापित पत्थर पर अपना पदचिह्न छोड़ा था, जहाँ पवित्र गंगा हर समय इसे छूती है।

हरद्वार या हरिद्वार दो शब्दों से बना है: 'हर' या 'हरि', जिसका अर्थ है शिव या विष्णु, और 'द्वार', जिसका अर्थ है द्वार या प्रवेशमार्ग। मिलकर इसका अर्थ बनता है 'ईश्वर का प्रवेश द्वार'। कुछ लोग इसे हरद्वार कहते हैं, जिसका अर्थ शिव का प्रवेश द्वार होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि श्रद्धालु यहीं से केदारनाथ जाते हैं, जो समुद्र तल से 11,750 फीट की ऊँचाई पर हिमालय में स्थित एक प्राचीन शिव मंदिर है। अन्य लोग इसे हरिद्वार कहते हैं, जिसका अर्थ विष्णु का प्रवेश द्वार होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि यह बद्रीनाथ की ओर जाता है, जो हिमालय में समुद्र तल से 10,250 फीट की ऊँचाई पर स्थित विष्णु को समर्पित प्राचीन मंदिर है।

किवदंतियों के अनुसार, जब भगवान शिव ने अपनी जटाओं से देवी गंगा को मुक्त किया था, तब यह महान नदी हरिद्वार में ही अवतरित हुई थी। गंगा नदी ने गंगोत्री हिमनद के किनारे गौमुख में अपने स्रोत से 253 किलोमीटर बहने के बाद पहली बार हरिद्वार में गंगा के मैदान में प्रवेश किया था, जिससे इस शहर को इसका प्राचीन नाम 'गंगाद्वारा' मिला।

हरिव्दारे यदा याता विष्णुपदोदकी तदा।
तदेव तीर्थं प्रवर देवानामपि दुर्लभम।।

जब भगवान विष्णु के चरणों से निकली गंगा ने हरिद्वार में प्रवेश किया, तो यह स्थान देवताओं के लिए भी सबसे दुर्लभ तीर्थ बन गया।

प्राचीन शास्त्रों में हरिद्वार को कपिलस्थान, गंगाद्वारा और मायापुरी का पर्यायवाची बताया गया है। हरिद्वार, मौर्य साम्राज्य (322 से 185 ईसा पूर्व) और बाद में कुषाण साम्राज्य (पहली से तीसरी शताब्दी) के शासन के अंतर्गत आया। हरिद्वार का पहला आधुनिक लिखित प्रमाण एक चीनी यात्री ह्वेन त्सांग (Hiuen Tsang) के वृत्तांतों में मिलता है, जो राजा हर्षवर्धन (590–647) के शासनकाल के दौरान 629 ईस्वी में भारत आया था। उसने हरिद्वार को 'मो–यू–लो' (Mo-yu-lo) के रूप में वर्णित किया है, जिसके अवशेष अभी भी मायापुरी में मौजूद हैं, जो आधुनिक शहर के थोड़ा–सा दक्षिण में स्थित है। अपनी हरिद्वार यात्रा के दौरान पहले सिख गुरु – गुरु नानक (1469–1539) ने वर्ष 1504 में बैसाखी पर्व पर 'कुशावर्त घाट' पर स्नान किया था।

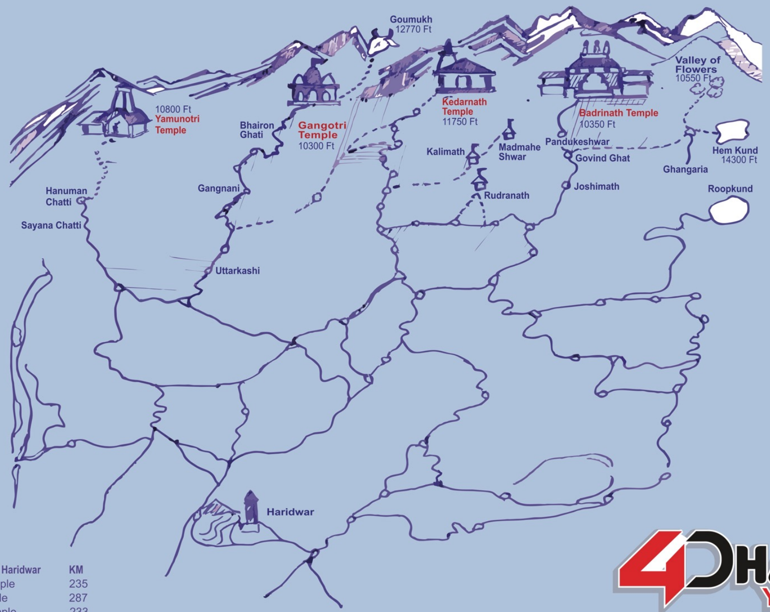

Destination from Haridwar	KM
Yamunotri Temple	235
Gangotri Temple	287
Kedarnath Temple	233
Badrinath Temple	316

4DHAM YATRA

हरिद्वार सभी हिन्दुओं के लिए श्रद्धा और चार पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा का प्रवेश द्वार है। यह चार पवित्र स्थान बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री हैं, जिन्हें एक साथ चार धाम या देवताओं के चार निवास स्थान कहा जाता है। हर साल लाखों श्रद्धालु पवित्र गंगा में डुबकी लगाने के लिए हरिद्वार आते हैं। शाम को हजारों भक्त घंटियों के साथ आरती गाते हुए देखे जा सकते हैं और फूलों व ताजी पत्तियों से बनी एक छोटी नाव में जलती ज्योति के साथ गंगा नदी की पूजा करते हैं। जब नदी पर कई तैरते दीये टिमटिमाते हैं, तब ऐसा प्रतीत होता है जैसे स्वर्ग धरती पर उतर आया हो।

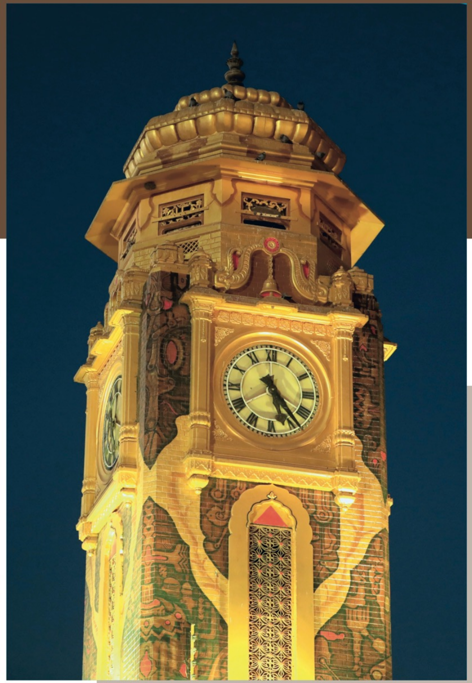

मैदानी इलाकों में प्रवेश करने वाली गंगा नदी के दोनों ओर की पहाड़ियों में पश्चिमी पहाड़ी पर मनसा देवी मंदिर और पूर्वी पहाड़ी पर चंडी देवी मंदिर स्थित हैं। हरिद्वार में प्रमुख और सबसे पसंदीदा स्नान घाट 'ब्रह्मकुंड' है। इसी के आसपास कनखल में दक्षेश्वर महादेव, सती कुंड और सती घाट, बिल्केश्वर मंदिर, माया देवी मंदिर, भीमगोड़ा व अन्य प्राचीन मंदिर हैं, तथा आधुनिक हिन्दू गुरुओं और आचार्यों द्वारा निर्मित हिन्दू देवताओं को समर्पित कई आधुनिक मंदिर भी हैं।

राजा सगर के 60,000 पुत्रों को स्वर्ग तक पहुँचाने के लिए राजा भगीरथ द्वारा पौराणिक गंगा को पृथ्वी पर लाया गया था। श्रद्धालुओं का मानना है कि मृतक की राख को गंगा में प्रवाहित करने से स्वर्ग में प्रवेश मिलता है। विशेषकर मृतकों की राख प्रवाहित करने के लिए बनाए गए घाटों पर रोज़ सैकड़ों लोग देखे जाते हैं।

साल भर मनाए जाने वाले हिन्दू त्योहारों पर लाखों लोग इस शहर में आते हैं। जुलाई के मध्य में हर साल लाखों भक्त सैकड़ों किलोमीटर पैदल यात्रा (कावड़ मेला) करके गंगा जल ले जाते हैं और भगवान शिव को अर्पित करते हैं।

चाहे कोई आस्था, आध्यात्मिकता की इच्छा या केवल व्यवसाय के कारण हरिद्वार की ओर आकर्षित हो, इसमें वास्तव में सभी के लिए कुछ न कुछ है। इसमें आश्चर्य नहीं कि हरिद्वार जाने के बाद व्यक्ति पंचतत्व (पाँच तत्व – वायु, पृथ्वी, अग्नि, जल और आकाश) के मिश्रण से बने भौतिक शरीर के नश्वर अस्तित्व की नहीं बल्कि आत्मा की अमरता के शाश्वत सत्य के दर्शन की सराहना करना शुरू कर देता है।

श्री दाऊजी धाम खालसा

श्री बर्फानी धाम

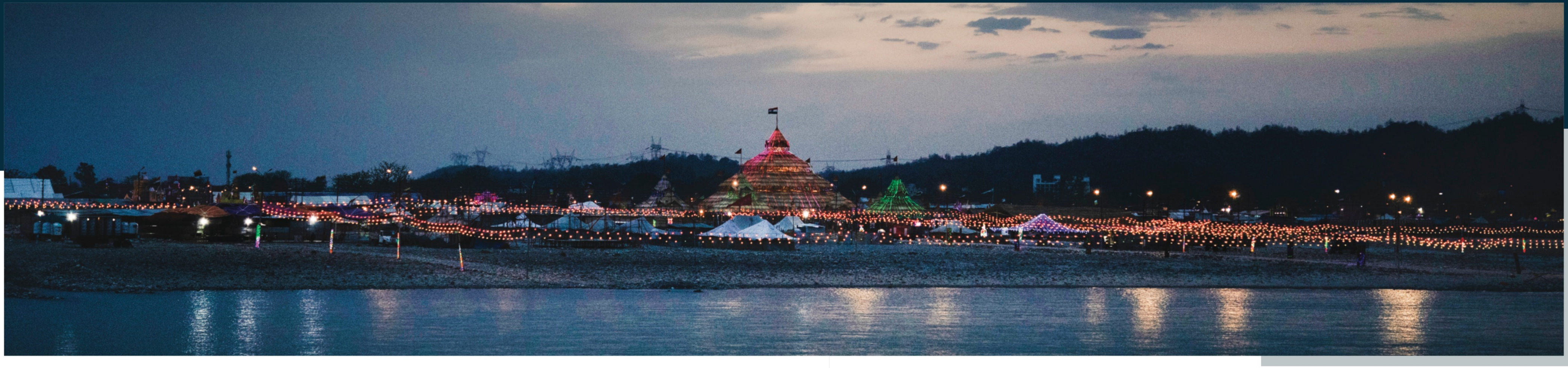

सबसे पुराने जीवित शहरों में से एक होने के कारण हरिद्वार का उल्लेख प्राचीन हिन्दू धर्मग्रंथों में मिलता है, क्योंकि यह शहर बुद्ध के समय से लेकर वर्तमान समय तक के जीवन और समय को बुनता है। हरिद्वार न केवल शरीर, मन और आत्मा से थके हुए लोगों का निवास स्थान रहा है, बल्कि कला, विज्ञान और संस्कृति सीखने के लिए भी कई लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। आयुर्वेदिक दवाओं और हर्बल उपचार के लिए एक दिव्य स्थान के रूप में हरिद्वार के ऐतिहासिक दर्जे के साथ–साथ अपनी पारंपरिक शिक्षा के अनोखे गुरुकुल, प्राकृतिक सुंदरता और प्रचुर हरियाली – सभी इस शहर को एक अनूठी सुगंध और आकर्षण देते हैं।

2021 के हरिद्वार कुंभ के अवसर पर हरिद्वार के सभी प्राचीन आश्रमों को चित्रों और अद्भुत रोशनी से सजाया गया था। दुनिया भर में सनातन धर्म के ज्ञान और शिक्षाओं का प्रसार करने वाले हरिद्वार में सैकड़ों प्राचीन आश्रम हैं, जिन्हें 'तीर्थ' कहा जाता है।

05

हरिद्वार का परिवर्तन

- Planning & Preparation
- Sundar (Beautiful) Kumbh
- Swachh (Clean) Kumbh
- Surakshit (Safe) Kumbh
- Swasth (Healthy) Kumbh
- Structured Kumbh
- Smart Kumbh
- Splendid Media Center

योजना और तैयारी

उत्तराखंड राज्य सरकार ने 2019 में ही 2021 के हरिद्वार कुंभ की तैयारी शुरू कर दी थी। कुंभ मेले के आयोजन के लिए गंगा के दोनों किनारों पर भूमि का एक बड़ा हिस्सा चुना गया था, ताकि एक नए अस्थायी शहर की स्थापना की जा सके। यह सब कुंभ मेला क्षेत्र, इसके किनारों और शहर के ठिकानों के सर्वेक्षण के साथ शुरू हुआ और अंततः संभावित उपयुक्त परियोजनाओं को चुना गया।

जब 2021 का हरिद्वार कुंभ आयोजित करने का निर्णय लिया गया, तब कोई महामारी नहीं थी। हालाँकि, कोरोना के प्रकोप और उसके नतीजतन लॉकडाउन लगने के कारण यह अनिश्चितता थी कि 2021 का हरिद्वार कुंभ आयोजित हो पायेगा या नहीं। अंत में उत्तराखंड सरकार ने लाखों लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए और विचार–विमर्श के बाद, कोविड–19 प्रोटोकॉल (Protocol) और SOPs (मानक संचालन प्रक्रिया) का पालन करने के दृढ़ संकल्प के साथ कुंभ मेले को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया।

महामारी के दौरान लाखों तीर्थयात्रियों की देखरेख और प्रबंधन के विशाल कार्य को देखते हुए, प्रशासन ने विभिन्न प्रशासनिक विभागों और गतिविधियों, सुरक्षा, बेहतर निगरानी और समर्थन प्रणाली के लिए एक अत्याधुनिक एकीकृत कमान और नियंत्रण केन्द्र के लिए प्रौद्योगिकी का सहारा लिया और समयोचित (Realtime alert) अलर्ट्स और इंटेलिजेंट ट्रैफिक सिग्नल (intelligent traffic signals) के लिए महत्वपूर्ण स्थानों पर 300 से अधिक CCTV कैमरों की स्थापना की। साथ ही, किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए भीड़ के घनत्व को मापने के लिए एक एनालिटिक्स (analytics) आधारित भीड़ प्रबंधन प्रणाली लागू की गई थी।

उत्तराखंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री त्रिवेंद्र सिंह रावत और श्री तीरथ सिंह रावत ने मेला अधिकारी श्री दीपक रावत के साथ सीधे पूरे कार्य की निगरानी की। 2021 के हरिद्वार कुंभ के लिए कुंभ मेला प्रशासन ने मेले के दौरान अपेक्षित लाखों श्रद्धालुओं के लिए विश्व स्तरीय सुविधाएँ जुटाने हेतु चौबीसों घण्टे काम करना शुरू कर दिया। तीर्थयात्रियों के लिए विकसित किए जाने वाले नए शहर के लिए 24 सेक्टरों में फैले 124 स्थानों पर स्थायी और अस्थायी निर्माण कार्य पूरा किया गया। गंगा के दोनों ओर नए घाट, सड़क, फुटपाथ, फ्लाईओवर, विश्राम स्थल, अस्पताल, रैन बसेरे, पार्किंग स्थल, पुलिस स्टेशन, पुलिस चौकी, चेक पोस्ट, कुंभ मेला पुलिस लाइन, स्वागत कक्ष, शौचालय और नए बस स्टैंड की स्थापना हुई। उक्त कार्य को पूरा करने के लिए सरकार ने 31 दिसंबर 2020 तक का लक्ष्य रखा गया था। कुंभ मेला प्रशासन लगातार सभी संबंधित विभागों के सचिवों और अधिकारियों से संपर्क कर जानकारी लेकर व्यवस्थाओं पर नियंत्रण कर रहा था। 2021 के हरिद्वार कुंभ में शामिल होने वाले हर श्रद्धालु को दिव्य अनुभव देने के वादे को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई।

मेला प्रशासन ने विशाल जनसमूह को ध्यान में रखते हुए आयोजन के लिए देवप्रयाग से हरिद्वार तक गंगा के दोनों किनारों पर 604 हेक्टेयर भूमि का चयन किया। कुंभ मेला प्रशासन ने प्रतिदिन लाखों श्रद्धालुओं के स्नानागार को ध्यान में रखते हुए सुविधाएँ जुटाई थीं। उन्होंने 107 घाटों को नया रूप दिया। गौरतलब है कि गंगा में पवित्र डुबकी लगाने के लिए सभी घाटों पर निर्माण कार्य 20 अक्टूबर 2020 तक पूरा कर लिया गया था। तीर्थयात्रियों के स्वागत के लिए हरिद्वार के पौराणिक शहर और उसके बाजारों व प्रतिष्ठानों को तैयार किया गया था। ट्रैफिक जाम को रोकने के लिए मोतीचूर, चंडी चौक, शंकराचार्य चौक, सिंहद्वार, ज्वालापुर सब्जी मंडी और पतंजलि परिसर के पास राजमार्गों को छह लेन क्षेत्रों में परिवर्तित किया गया था। तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए ऋषिकेश, हरिद्वार और ज्वालापुर रेलवे स्टेशनों पर नए प्लेटफॉर्म और पुलों का निर्माण किया गया था।

कुंभ मेले के लिए मेला प्रशासन ने एक पूरी तरह से नए अस्थायी शहर का निर्माण किया, जिसमें सैकड़ों संतों और श्रद्धालुओं के लिए सभी साधन, सुविधाएँ और रहने की व्यवस्था थी। कुंभ मेले में इस नए चलायमान शहर में पेयजल, राशन की दुकान, बिजली, सीवर, सफाई, सड़क, पार्किंग और सुरक्षा समेत तमाम सुविधाएं थीं। इस अस्थायी शहर के बारे में दिलचस्प बात यह थी कि इसकी स्थापना से हरिद्वार शहर की बुनियादी सुविधाओं पर कोई असर नहीं पड़ा, बल्कि इन सब से एक स्मार्ट सिटी बनाने की दिशा में एक कदम बढ़ाने की सहायता जरूर हुई। यह अस्थाई शहर 5 लाख वर्ग फुट से अधिक के क्षेत्र में लाखों की संख्या में आए संतों के लिए स्थापित किया गया था। संतों के निवास का मुख्य स्थल होने के कारण इस स्थान को 'बैरागी शिविर' कहा जाता था। बैरागी शिविर में सन्यासियों के लिए सबसे अधिक शिविर थे।

मेला प्रशासन ने दिसंबर 2020 तक स्थायी एवं अस्थायी निर्माण कार्य पूरा करके कुंभ मेला शुरू करने की विधिवत घोषणा कर दी थी। जनवरी 2021 से श्रद्धालु और अखाड़ों के संत हरिद्वार पहुँचने लगे थे। दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक उत्सव हरिद्वार कुंभ 2021 की शुरुआत की तैयारी, मेला प्रशासन की इस मंशा के साथ बड़े पैमाने पर शुरू हुई, कि कुंभ में आने वाले सभी तीर्थयात्री और पर्यटक एक दिव्य अनुभव लेकर गंगा तट से वापस जाएं।

सुंदर कुंभ

कुंभ मेला उत्सव प्राचीन भारतीय संस्कृति में एक बेजोड़ वैश्विक आयोजन है। जहाँ भी कुंभ मेला आयोजित किया जाता है, संबंधित सरकार मेला क्षेत्र के सौंदर्यीकरण का कार्य करती है और इस महापर्व को मनाने के लिए लाखों संतों और अनुयायियों को सुविधाएँ प्रदान करती है। 2021 के हरिद्वार कुंभ के लिए, उत्तराखंड सरकार ने बहुत कम समय के भीतर हरिद्वार कुंभ को पूरी तरह से दोबारा जीवंत करने का एक अभूतपूर्व लक्ष्य निर्धारित किया। इसका उद्देश्य हरिद्वार के पूरे पवित्र शहर को अपनी प्राचीन विरासत और संस्कृति को बनाए रखते हुए एक आधुनिक और स्मार्ट शहर में बदलना था। कुंभ मेला प्रशासन ने शहर के हर चौराहे, प्रमुख सड़क, घाटों और पार्कों को बदलकर प्राचीन शहर के सुंदर दृश्य को सुलभ बनाने की दिशा में काम किया।

गंगा के घाटों और शहर की प्रमुख सड़कों के किनारे लुभावनी मूर्तियों की स्थापना या पुनर्निर्माण किया गया, जो तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया। ओम घाट, सिंह द्वार, वीआईपी घाट, चंडी घाट और हर की पौड़ी की आभा इतनी सुंदर थी कि स्नान के लिए आने वाले श्रद्धालु अक्सर दिन भर सेल्फी लेते देखे जा सकते थे। गंगा नदी में स्थापित सुंदर फव्वारों की रंग–बिरंगी रौशनी जब हवा में तैरते लयबद्ध संगीत के साथ ऊपर–नीचे होती थी, तो भक्त उन्हें निहारते रह जाते थे। मुख्य मार्ग से हर की पौड़ी (ब्रह्मकुंड) की ओर जाने वाले मार्ग की दीवारों पर समुद्र मंथन की कहानी को इतने सुंदर ढंग से उकेरा गया था कि ऐसा लग रहा था मानो सब कुछ जीवंत हो उठा हो। राज्य सरकार द्वारा पूरे कुंभ मेला क्षेत्र में बिजली की निर्बाध आपूर्ति के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मेला क्षेत्र में अधिकांश स्थानों पर भूमिगत केबल बिछाई गई थी।

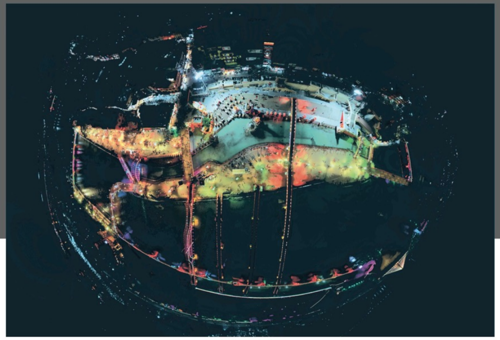

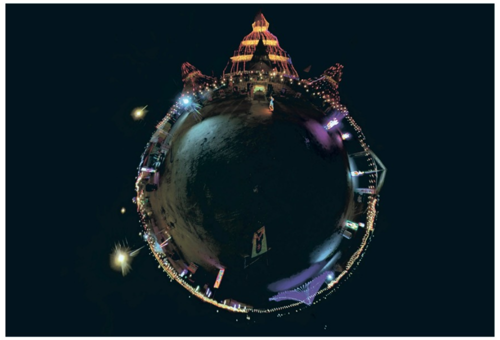

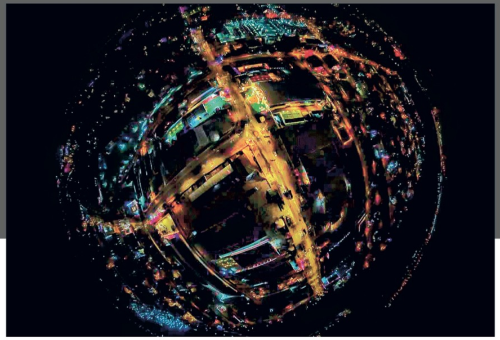

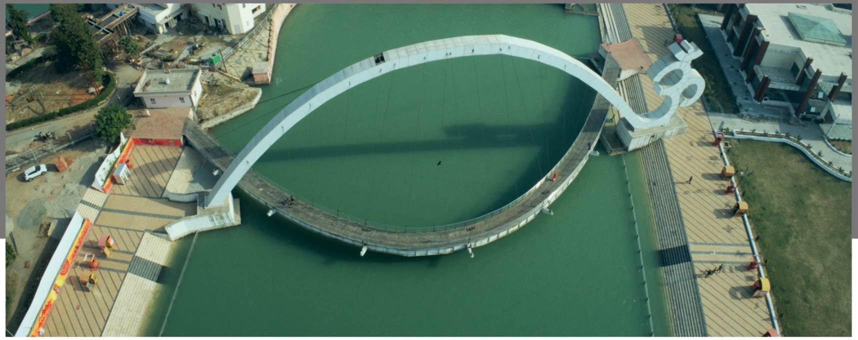

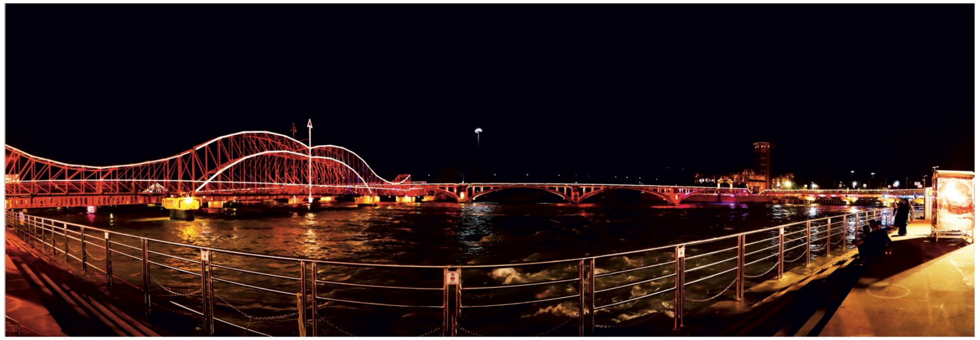

नए फ्लाईओवर के निर्माण ने हरिद्वार–सर्वानंद घाट, पंतद्वीप ब्रिज, वीआईपी घाट ब्रिज, हर की पौड़ी हाईवे, बैरागी कैंप फ्लाईओवर, श्री यंत्र आश्रम ब्रिज, रानीपुर झाल ब्रिज, सुखी नदी ब्रिज और चंडी घाट का रूप बदल दिया। हरिद्वार के सौंदर्यीकरण के लिए मुख्य मार्गों पर भव्य स्वागत द्वार बनाए गए थे।

2021 के हरिद्वार कुंभ में स्नान के लिए आने वाले सभी तीर्थयात्री और दर्शनार्थी आस्था पथ और राम पथ की सुंदरता के चलते उन्हें देखने से खुद को रोक नहीं सके।

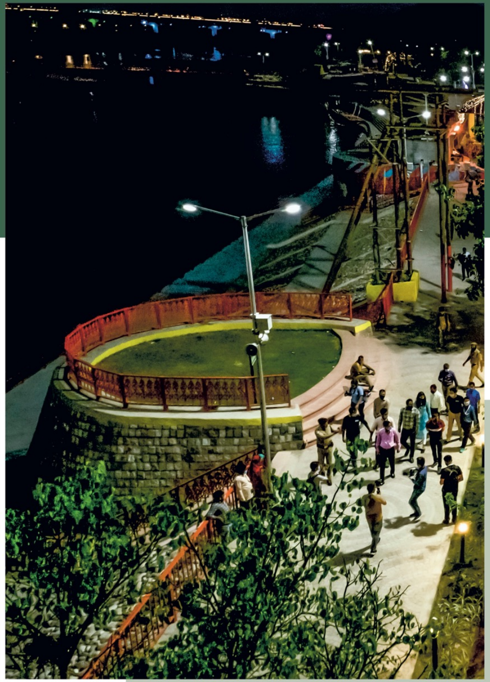

आस्था पथ

2021 के हरिद्वार कुंभ को दिव्य और भव्य बनाने के लिए कुंभ मेला प्रशासन ने एक आस्था पथ का निर्माण किया। सनातनी संस्कृति, परंपरा और अध्यात्म के रंगों में रंगा यह मार्ग यात्रियों और भक्तों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र बना।

आस्था पथ के निर्माण में आधुनिक तकनीक के साथ ही अनुभवी कलाकारों की सेवाएँ ली गई थी। इसे इस तरह से विकसित किया गया था कि भक्त शांत वातावरण में सुबह की सैर, योग और ध्यान जैसी आध्यात्मिक क्रियाएँ कर सकें। आस्था पथ पर बना सेल्फी प्वाइंट, ओपन थियेटर और शंख का स्मारक लोगों के लिए खास आकर्षण बना रहा। इस पथ पर दुनिया का सबसे बड़ा दीया भी लगाया गया था।

राम पथ

कुंभ मेला प्रशासन ने हरिद्वार के मुख्य मार्ग की ओर जाने वाले मार्ग पर राम पथ भी बनाया था। एक किलोमीटर लम्बे क्षेत्र में बने राम पथ पर रामायण के विभिन्न प्रसंगों के सुंदर चित्रों का चित्रण किया गया था। इसने भक्ति से अभिभूत कई श्रद्धालुओं के लिए रामायण को जीवंत कर दिया।

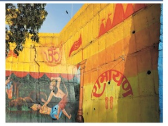

पेंट माय सिटी (Paint my City)

2021 के हरिद्वार कुंभ के दौरान शहर की दीवारों को सौंदर्यपरकता से रंगने और पौराणिक कथाओं के माध्यम से कुंभ मेले के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए आध्यात्मिक शहर हरिद्वार की सुंदरता और वैभव को बढ़ाने के उद्देश्य 'पेंट माय सिटी' पहल शुरू की गई थी। ऐसा प्रत्येक मंदिर, आश्रम, मठ, सरकारी कार्यालय, घाट, दीवार, पुल और फ्लाईओवर को प्राचीन शास्त्रों और पौराणिक कथाओं की विभिन्न कहानियों को दर्शाने वाले चित्रों से सजाने के विचार से किया गया था।

इसने कुंभ मेले के दौरान बड़ी संख्या में आने वाले यात्रियों के आध्यात्मिक अनुभव को बल दिया और एक माहौल तैयार किया। कुंभ मेले की आत्मा को प्रतिबिंबित करने के अलावा, इस अभियान के परिणामस्वरूप लोगों ने स्वेच्छा से खुद को दीवारों को ख़राब करने से रोका, जिससे समग्र रूप से स्वच्छता बनाए रखने में मदद मिली।

तहसील ऋषिकेश

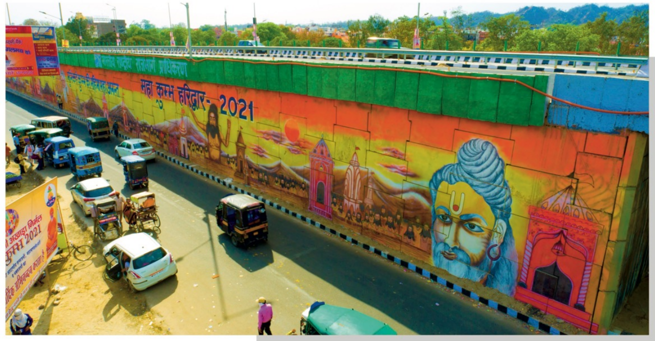
महा कुम्भ हरिद्वार- 2021

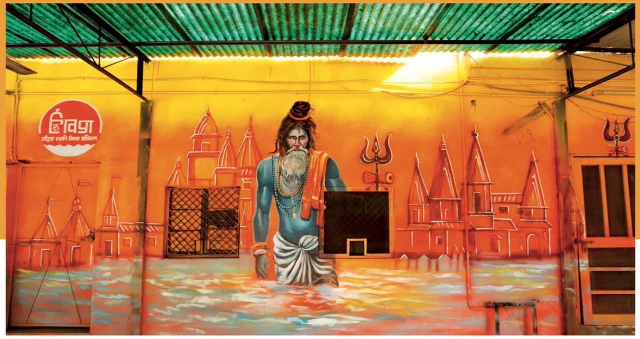

विश्व में अपनी तरह की सबसे बड़ी परियोजनाओं में से एक पर काम करने के लिए नमामि गंगे परियोजना से प्राप्त धन की सहायता से पेशेवर एजेंसियों को शामिल किया गया, जिसके अंतर्गत 3.75 लाख वर्ग फुट की दीवारों पर सैकड़ों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों ने चित्र बनाए।

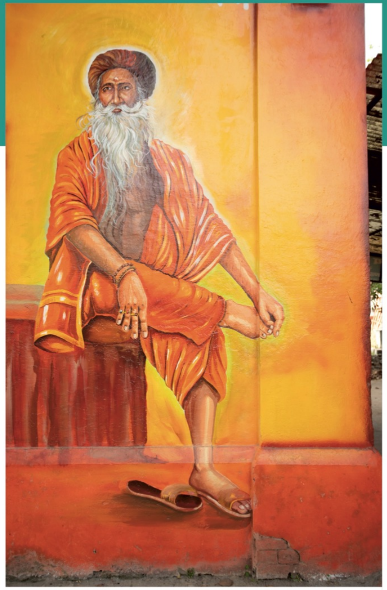

सार्वजनिक भवनों की दीवारों, रेलवे अंडरपास, फ्लाईओवर, पानी के टैंकर, बस स्टॉप, रेलवे स्टेशन व कोच, सार्वजनिक परिवहन वाहन, धातु से बने शटर और फुटओवर ब्रिज पर भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत, कुंभ मेले की पौराणिक कथाओं, वास्तुकला, संस्कृति और आधुनिक कला को दर्शाने वाले विषयों को जादुई तरीके से चित्रित किया गया था।

स्वच्छ कुंभ

2021 के हरिद्वार कुंभ मेले को लम्बे समय तक अपनी स्वच्छता के स्तर के लिए याद किया जाएगा। स्वच्छता किसी भी धार्मिक पर्व का एक महत्वपूर्ण अंग होती है और कुंभ मेले जैसे विशाल आयोजन में लाखों लोगों के रहने व उनकी दैनिक गतिविधियों से उत्पन्न अपशिष्ट को यदि कुशलता से नहीं संभाला जाता तो ये कई बीमारियों का कारण बन सकता था।

कुंभ मेला क्षेत्र और हरिद्वार शहर की 604 हेक्टेयर भूमि में स्वच्छता और सफाई व्यवस्था को बनाए रखना एक बहुत बड़ा कार्य था। मेला प्रशासन शुरू से ही दो विषयों पर अत्यधिक केन्द्रित था : शुचिता और स्वच्छता। इसलिए प्रसाधनों को तकनीकी उपकरणों का उपयोग करते हुए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया था, जिसमें तरल अपशिष्ट को शौचालय से उपचार सुविधाओं तक निपटाना, ठोस अपशिष्ट को निपटान स्थल से वेस्ट ट्रीटमेंट प्लान्ट तक पहुँचाना, और नदी के पानी की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए जल निकासी का प्रबंधन शामिल था।

श्रद्धालुओं की बुनियादी आवश्यकताओं को एक कुशल और स्वच्छ तरीके से पूरा करने के लिए कुंभ मेला क्षेत्र और उसके आसपास 18,000 से अधिक (स्थायी और अस्थायी) शौचालय, 1950 स्नानघर और 500 से अधिक चेंजिंग रूम बनाए गए थे। पवित्र गंगा नदी को साफ रखने के लिए हरिद्वार में मेला प्रशासन ने अनूठी पहल की। कुंभ मेले की सभी घाटों पर अलग–अलग स्थानों पर 256 आस्था कलश स्थापित किए गए थे ताकि सभी भक्त अपने कपड़े और पवित्र सामान (जो विभिन्न अनुष्ठानों के बाद आवश्यक नहीं होते) गंगा में विसर्जित करने के बजाय उन बड़े कलशों में डाल सकें। तीर्थयात्रियों ने इन उपायों की सराहना की और प्रशासन के इस अनूठे अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेकर कुंभ के दौरान गंगा की शुद्धता बनाए रखने में मदद की।

कुंभ मेला प्रशासन ने यह सुनिश्चित किया कि कुंभ मेले में आने वाले सभी तीर्थयात्रियों तक गंगा का स्वच्छ और शुद्ध पानी पहुँचे। इस बड़े उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए जगजीतपुर, सराय, चंडीघाट, लक्कड़घाट, चंद्रेश्वर नगर और चोरपानी में सीवेज ट्रीटमेंट प्लान्टों का एक विशाल नेटवर्क बिछाया गया था। गंगा की स्वच्छता बनाए रखने के लिए नमामि गंगे मिशन के तहत विभिन्न सीवेज शोधन कार्य पूरे किए गए। साथ ही कुंभ मेला परिसर में तीर्थयात्रियों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र और परमाणु ऊर्जा विभाग के सहयोग से वाटर एटीएम लगाए गए थे। ये वाटर एटीएम एक प्यूरिफायर सिस्टम से लैस थे जो सभी को स्वच्छ और शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराते थे।

कुंभ मेला क्षेत्र में साफ–सफाई की पुख्ता व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए मेला प्रशासन ने कुंभ मेला परिसर को चार मण्डलों – कनखल, मायापुर, भूपतवाला और गौरीशंकर में बाँटा। इन सभी मंडलों से चौबीसों घण्टे जुड़े रहने के लिए स्वच्छता निरीक्षक, पर्यवेक्षक, पर्यावरण मित्र, सहायक और चालक नियुक्त किए गए। कुंभ मेले में प्रतिदिन लाखों आगंतुक आते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई टन कचरा उत्पन्न होता है। इस विकट स्थिति से निपटने के लिए ठोस कचरा उठाने वाले कर्मचारियों को काम पर रखा गया और शहर की घाटों व सड़कों के हर कोने पर 5,000 से अधिक कूड़ेदान लगाए गए थे, जिनसे इक्कट्ठे किए गए कचरे को उचित उपचार के लिए कचरा डंप में ले जाया जा सके।

हालाँकि प्रशासन ने सभी क्षेत्रों में 11,000 से अधिक सफाई कर्मचारियों को तैनात किया था, लेकिन सीसीटीवी और अन्य माध्यमों से लगातार घाटों पर सफाई की निगरानी की जा रही थी। साथ ही, कोरोना वायरस की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए मेला प्रशासन ने स्नान के दौरान मास्क पहनना अनिवार्य कर दिया था और लोगों को उचित स्वच्छता के बाद ही घाटों में प्रवेश दिया जा रहा था। सरकार ने विभिन्न स्थानों पर असंख्य साइन बोर्ड लगाए थे और घाटों पर आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु और आगंतुक को वेंडिंग मशीन या स्वास्थ्य और स्वच्छता कर्मियों की सहायता से अपने हाथों को साफ करते देखा जा सकता था।

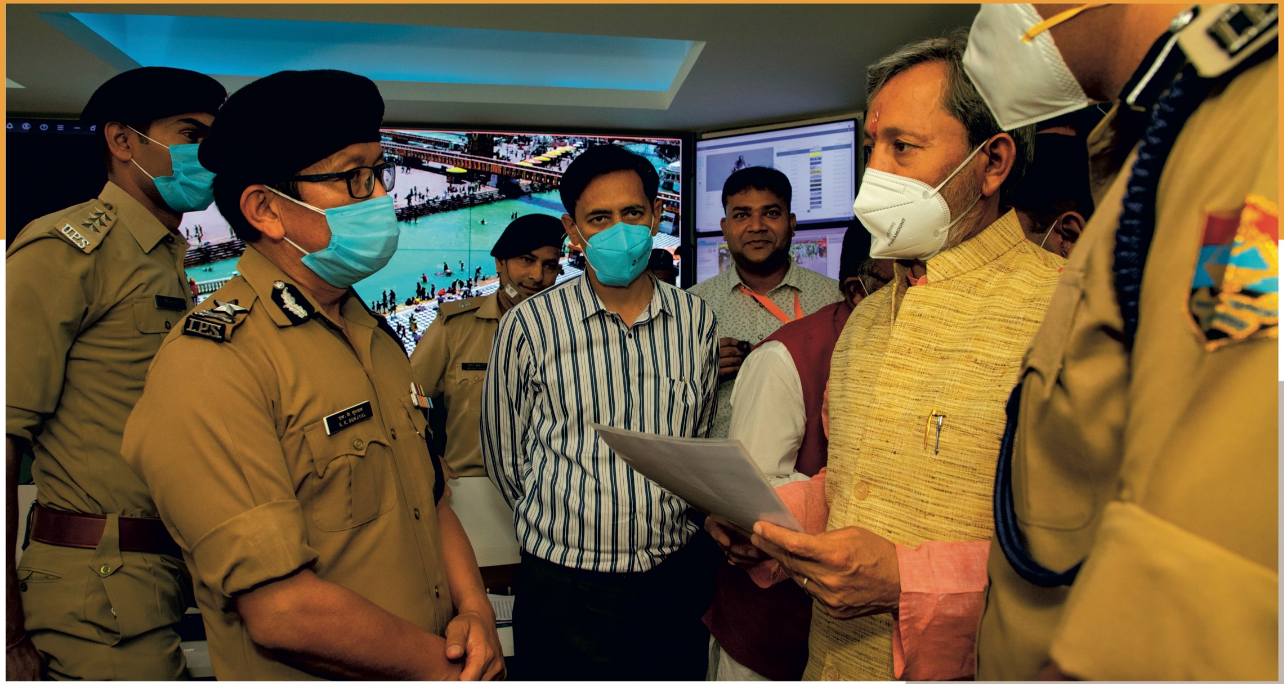

सुरक्षित कुंभ

2021 के हरिद्वार कुंभ के दौरान, विशेष रूप से मुख्य स्नान के दिनों में, प्रमुख सुरक्षा चुनौतियों में भीड़ प्रबंधन, आतंकवादी हमलों और अन्य आपदाओं की रोकथाम, और सड़क और पैदल यातायात का सुचारू प्रवाह शामिल था। इससे निपटने के लिए कुंभ मेला महानिरीक्षक श्री संजय गुंज्याल के नेतृत्व में एक कोर सुरक्षा टीम का गठन किया गया था, जो निगरानी, निर्बाध संचार, कुशल आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली और निरंतर जाँच के लिए बनाई गई थी।

सीसीटीवी कैमरों से घाटों, सड़कों, विश्राम स्थलों, रैन बसेरों, फुटपाथों, रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंड, पार्किंग स्थलों, होटलों, मंदिरों और आश्रमों की चौबीसों घंटे निगरानी की जा रही थी। सुरक्षा कारणों से एनएसजी की टीमों, अर्धसैनिक बलों और पीएसी की कंपनियों, एटीएस की टीमों, बम निरोधक दस्तों और डॉग स्क्वायड के साथ हजारों पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया था। गंगा में स्नान करने वाले तीर्थयात्रियों की सुविधा और सुरक्षा के लिए, उन्हें आपात स्थिति में पानी से बाहर निकालने के लिए युवा सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया गया था।

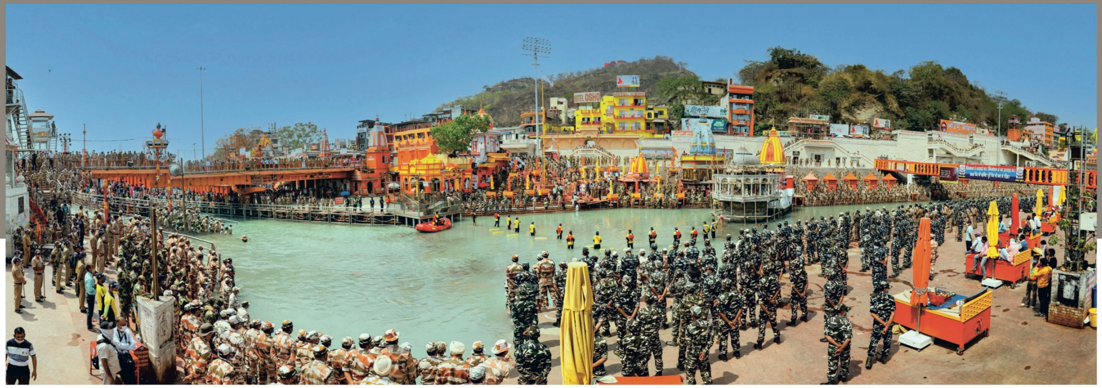

कुंभ मेले में सुरक्षा व्यवस्था की चौबीसों घंटे निगरानी के लिए प्रशासन ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग करते हुए अत्याधुनिक जाँच केन्द्र की स्थापना की थी। हर की पौड़ी में सुरक्षा बलों के लिए आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में 2021 के हरिद्वार कुंभ की सुरक्षा के लिए तैनात सभी पुलिस और अर्धसैनिक बलों के जवानों ने मेले के नाम की शपथ ली, ताकि आयोजन में भाग लेने वाले सभी लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

इन उपायों के कारण 2021 के हरिद्वार कुंभ के दौरान डूबने, भगदड़ मचने, वाहन दुर्घटना, चोरी, व्यक्ति या सामान की गुमशुदगी या अन्य किसी दुर्घटना की कोई बड़ी घटना सामने नहीं आई।

बच्चों के लिए सुरक्षित कुंभ

2021 के हरिद्वार कुंभ को बच्चों की सुरक्षा और उनके अधिकारों के लिए भी याद किया जाएगा। कुंभ मेला प्रशासन ने आयोजन की योजना बनाते समय कुंभ मेला क्षेत्र को बाल श्रम से मुक्त रखने का निर्णय लिया था और यह विचार "बाल हितैषी हरिद्वार कुंभ 2021" के रूप में एक वास्तविकता बन गया।

यह पहल कुंभ मेला परिसर में बच्चों से संबंधित कुरीतियों और अवैध गतिविधियों जैसे बाल भीख, बाल श्रम और बाल शोषण को रोकने में सफल रही। कुंभ मेला परिसर में छह स्थानों पर बच्चों के लिए विशेष प्रकोष्ठ स्थापित किए गए थे जहाँ नोडल अधिकारी ऐसी गतिविधियों पर नजर रखते थे। बाल सुरक्षा पर साइनबोर्ड, पोस्टर, ग्राफिटी, लाउडस्पीकर और सेमिनार के माध्यम से इस पहल के बारे में जन जागरूकता के लिए विभिन्न कदम उठाए गए। बच्चों की सुरक्षा के लिए कुंभ मेले में आने वाले बच्चों की जेब में पता और अन्य जानकारी वाली पर्चियाँ रखी गई थीं ताकि यदि वे भटकें तो उन्हें ढूँढना सुनिश्चित किया जा सके।

स्वस्थ कुंभ

कुंभ मेला प्रशासन ने श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित करने के लिए विश्व स्तरीय व्यवस्था की थी। कुंभ मेला क्षेत्र में कई आधुनिक अस्थायी अस्पताल बनाए गए थे जहाँ ओपीडी, आईसीयू, बर्न यूनिट, सीसीयू, वेंटिलेटर, एक्स–रे मशीन और अल्ट्रासाउंड सहित चौबीसों घण्टे आपातकालीन सेवाएँ उपलब्ध थीं। कुंभ मेला प्रशासन ने पंतद्वीप क्षेत्र में कई बिस्तरों वाला एक वातानुकूलित अस्पताल तैयार किया था, जहाँ डॉक्टरों, नर्सों और चिकित्सा कर्मचारियों की सेवाएँ चौबीसों घण्टे उपलब्ध थीं।

किसी भी आपातकालीन स्वास्थ्य स्थिति से निपटने के लिए सरकार ने एम्बुलेंस, बाइक एम्बुलेंस, एक नाव एम्बुलेंस और एक एयर एम्बुलेंस की तैयारी की। प्रशासन ने हरियाणा और उत्तर प्रदेश राज्यों के साथ–साथ इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (IMA) के सहयोग से पर्याप्त संख्या में डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों की व्यवस्था की थी। किसी भी तीर्थयात्री के कोरोना संक्रमण, फ्लू, बुखार, हैजा या किसी अन्य प्रकार की बीमारी के इलाज के लिए क्षेत्र में उच्च स्तरीय व्यवस्था की गई थी।

कुंभ मेला परिसर के प्रत्येक सेक्टर में 10 से 20 बिस्तरों की व्यवस्था के साथ एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किया गया था। वहीं बैरागी कैंप, गौरीशंकर, भूपतवाला और रोड़ी बेलवाला में 20 बिस्तरों के अस्पताल बनाए गए थे। आपातकालीन स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के लिए ज्वालापुर, मोतीचूर, रायवाला और ऋषिकेश जैसे हरिद्वार के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी अस्थायी अस्पताल स्थापित किए गए थे। कुंभ मेला स्वास्थ्य अधिकारी श्री अर्जुन सिंह सेंगर के अनुसार मेले के दौरान जनता की सेवा के लिए 29 छोटे–बड़े अस्पताल और 9 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किए गए थे।

साथ ही कई स्वयंसेवी संगठनों ने तीर्थयात्रियों की सेवा के लिए नेत्र देखभाल केन्द्रों सहित अपने स्वास्थ्य शिविर स्थापित किए थे।

संरचित कुंभ

कुंभ मेला दुनिया का सबसे बड़ा मेला है और लाखों भक्तों और हजारों वाहनों की आवाजाही की व्यवस्था करना किसी भी प्रशासन के लिए कठिन हो सकता है। कुंभ मेला प्रशासन ने भारतीय रेलवे सहित दुनिया के सबसे बड़े परिवहन संगठन में से एक के साथ योजना बनाई और काम किया। आने वाले वाहनों के लिए 23 पार्किंग क्षेत्रों का निर्माण किया गया। यातायात मार्गों और प्रणालियों को इस तरह व्यवस्थित और कार्यान्वित किया गया कि इससे हरिद्वार से गुजरने वाले वाहनों पर कोई असर न पड़े। यातायात प्रबंधन ने यह सुनिश्चित किया कि हरिद्वार आने वाले श्रद्धालुओं को अपने वाहन पार्क करने के लिए दूर न जाना पड़े। अधिकांश पार्किंग स्थल गंगा के दोनों किनारों पर बने नए घाटों के पास बनाए गए थे। भक्तों को घाटों तक लाने के लिए इन स्थानों पर पर्याप्त मात्रा में शटल बसें भी तैनात की गई थीं।

2021 के हरिद्वार कुंभ की योजना शुरू से ही कुशलता से तैयार की गई थी। विकलांगों, महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए नए घाटों का विकास किया गया और पुराने घाटों का जीर्णोद्धार किया गया।

स्मार्ट कुंभ

अपने जनसमूह व परंपरा तथा आस्था व आध्यात्मिकता की असंख्य अभिव्यक्तियों के साथ कुंभ मेले ने प्रशासकों को हरिद्वार की स्मार्ट सिटी परियोजना को आगे बढ़ाने और शहर को आध्यात्मिक संस्कृति के साथ 21वीं सदी के शहर के रूप में प्रदर्शित करने का अवसर दिया। प्राचीन काल से अपनी अद्भुत आभा के लिए प्रसिद्ध हरिद्वार को खुद को आधुनिक समय के अनुरूप एक नागरिक–अनुकूल और दीर्घकालिक शहर में नवीनीकृत करना पड़ा। 2021 का हरिद्वार कुंभ न केवल अपनी शुचिता, स्वच्छता, सुरक्षा और उत्कृष्ट परिवहन व्यवस्था के लिए बल्कि इसके प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए भी याद किया जाएगा।

मेला प्रशासन ने 'कुंभ द्वार' नाम से एक ऐप जारी किया जिसके माध्यम से सुरक्षा कर्मियों की नियुक्ति, यातायात का विवरण, रेलवे और बस सेवाओं के बारे में जानकारी, बोर्डिंग और लॉजिंग के स्थान, पुलिस नियंत्रण कक्ष, वाहन पार्किंग स्थल, विभिन्न घाटों तक पहुँचने के मार्गों सहित कार्यक्रम से संबंधित सभी जानकारी उपलब्ध कराई गई थी।

मेला प्रशासन ने यातायात प्रबंधन और भीड़ नियंत्रण के लिए उत्तराखंड अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र (यूएसएसी) की भी मदद ली। यूएसएसी के वैज्ञानिकों ने कुंभ मेला क्षेत्र के 163 वर्ग किलोमीटर का एक डेटाबेस तैयार किया और यातायात व्यवधानों और संबंधित विषयों की पहचान करने के लिए उपग्रहों के माध्यम से कार्य किया।

कुंभ मेला प्रशासन ने कुंभ मेले से संबंधित सूचनाओं को 2021 के हरिद्वार कुंभ सोशल मीडिया हैंडल सहित उसकी अधिकारिक वेबसाइट पर भी साझा किया। लोगों को शाही स्नान, पार्किंग स्थल, होटल, धर्मशाला, एटीएम, पेयजल, रेस्तरां, अस्पताल और बसों व रेलवे के संचालन से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराई गई। मेले में हाई–टेक इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस सिस्टम, नवीनतम सीसीटीवी, आधुनिक वॉयस सेट, ऑडियो आईपी, अंडरग्राउंड सर्विलांस टेबल और स्मार्ट व आदर्श निरीक्षण के लिए क्राउड मॉनिटरिंग सर्विलांस सिस्टम के माध्यम से उच्च स्तर की सुरक्षा सुनिश्चित की गई थी।

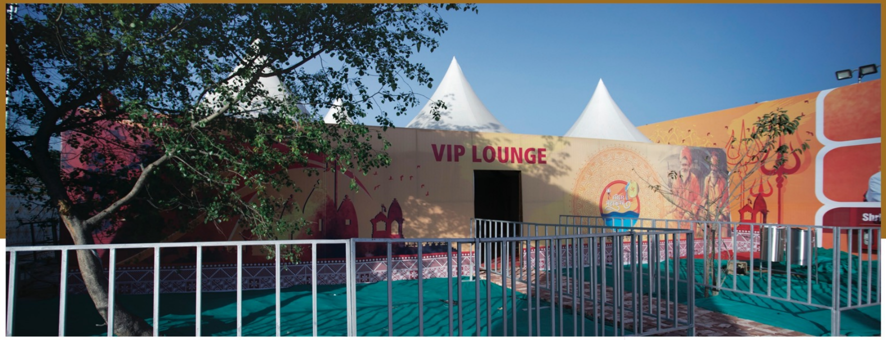

शानदार मीडिया सेंटर

कुंभ दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे लोकप्रिय धार्मिक आयोजन है। कुंभ मेले में भाग लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक और श्रद्धालु आते हैं। विश्व के सबसे बड़े उत्सव के प्रसारण के लिए कुंभ मेले से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों के प्रचार–प्रसार के लिए एक आधुनिक मीडिया सेंटर की स्थापना की गई थी। हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे चंडी टापु नील धारा में विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त मीडिया सेंटर बनाया गया था। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारों ने कुंभ मेले में हर घटना की रिपोर्ट सीधे अपने संबंधित संगठनों को देने के लिए इस सेंटर का अच्छा उपयोग किया। काम को आसान बनाने के लिए प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक – दोनों माध्यम के मीडियाकर्मियों के लिए नवीनतम कंप्यूटर स्थापित किए गए थे। लाइव प्रसारण के लिए एक स्टूडियो बनाया गया था और मेले से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रसारित करने के उद्देश्य से अधिकारियों के लिए एक प्रेस कॉन्फ्रेंस रूम स्थापित किया गया था।

मीडिया सेंटर में भोजन, योग, ध्यान और ठहरने की सुविधा थी। प्रशासन मेले के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के बारे में अपडेट देने के लिए पत्रकारों के साथ लगातार संपर्क में था। 2021 के हरिद्वार कुंभ की धरोहर, सारांश और दिव्यता इस मीडिया सेंटर के माध्यम से दुनिया भर में फैली।

06

कुंभ का दृश्य

कुंभ मेले का मूल अर्थ यही है कि ये सभी संस्कृतियों का संगम और आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक है।

2021 का हरिद्वार कुंभ देवत्व और भव्यता का प्रतीक था। कुंभ मेला क्षेत्र में पहुँचते हुए मनमोहक दृश्य देखे जा सकते थे, जिसके अनुभव से आत्मा तृप्त हो जाए। जहाँ तक नजर जाती थी वहाँ तक फैले करोड़ों तंबू, भित्तिचित्रों (ग्राफिटी) के साथ सड़कों और फ्लाईओवरों को इस तरह से ढँक दिया गया था कि ऐसा लगता था जैसे सनातन धर्म से जुड़ी कई कहानियों के पात्र जीवंत हो उठे हों। सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रंग में अलंकृत एक नया रूपांतरित दिव्य नगर सामने आया। रात में कुंभ मेला क्षेत्र एक असाधारण दृश्य का अनुभव देने वाली रौशनी के बहुरूपदर्शक की तरह दिखता था।

कुंभ मेले के दौरान हरिद्वार शहर सोता नहीं है। सौम्य हवा और आध्यात्मिक घाटों के साथ नदी का सुखद दृश्य जीवन भर का अनुभव है। 2021 के हरिद्वार कुंभ की महानता मंत्रों के जाप, अखाड़ों के शाही स्नान, दीपों की चमक और इससे जुड़े इतिहास में झलकती थी।

भक्तों के लिए अत्यंत स्वादिष्ट लंगर (सामुदायिक भोजन) और प्रसाद (पवित्र चढ़ावा) चौबीसों घण्टे उपलब्ध था।

कुंभ मेले में श्रद्धालु जीवन के सभी क्षेत्रों से आते हैं और पवित्र नदी में डुबकी लगाने व महान संतों से मिलने के लिए कई कठिनाइयों से गुजरते हैं। कुंभ मेला साधुओं, कल्पवासियों, आगंतुकों और साधकों का एक समागम है। लेकिन पारंपरिक रूप से ये उत्सव उन पुण्यात्माओं, तपस्वियों, संतों, साधुओं और साध्वियों का है जिन्होंने धर्म के अनन्य जीवन का पालन करने के लिए सांसारिक जीवन को त्याग दिया है। ये तपस्वी या तो धार्मिक संगठनों, आश्रमों और अखाड़ों से संबंधित होते हैं या फिर भिक्षाटन करने वाले लोग होते हैं।

अखाड़े

कुंभ मेले का एक अभिन्न अंग माने जाने वाले अखाड़ों का गठन 8वीं शताब्दी में हिन्दू संत आदिगुरु शंकराचार्य ने सनातन जीवन शैली की रक्षा के लिए साधुओं व संतों के संगठनों को एकजुट करने के उद्देश्य से किया था। आदि शंकराचार्य ने सभी अखाड़ों की पूजा और देवता के निर्धारण का आयोजन पूजा के नियमों और विधियों के साथ किया था।

प्रत्येक अखाड़े में समान धार्मिक रीति–रिवाजों, मतों और विचारधाराओं के अनुयायी होते हैं, जो शास्त्रों और शस्त्रों में विशेषज्ञता रखते हैं। इन अखाड़ों का एक विशेष ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है और इन्हें देवताओं की पूजा के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। इन श्रेणियों में शैव, वैष्णव और उदासीन शामिल हैं और इनके अंतर्गत 13 अखाड़े आते हैं, जिनके नाम हैं – जूना अखाड़ा, निरंजनी अखाड़ा, महानिरवाणी अखाड़ा, अटल अखाड़ा, आवाहन अखाड़ा, पंच अग्नि अखाड़ा, आनंद अखाड़ा, दिगंबर अनी अखाड़ा, निर्वाणी अनी अखाड़ा, निर्मोही अनी अखाड़ा, बड़ा उदासीन अखाड़ा, नया उदासीन अखाड़ा और निर्मल अखाड़ा।

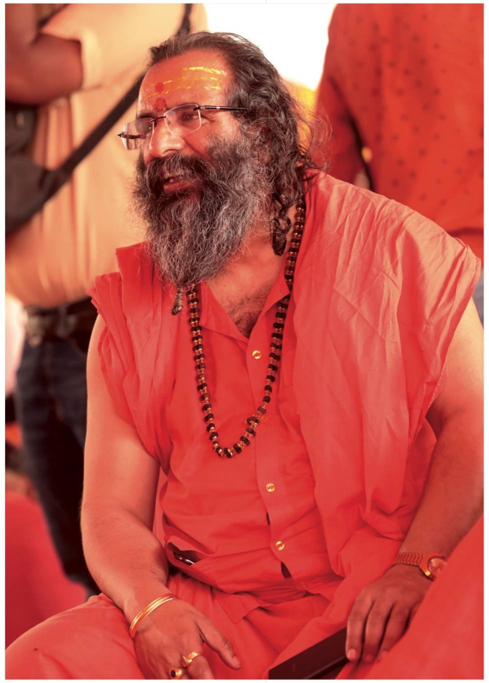

अखाड़ा, जिसका शाब्दिक अर्थ 'कुश्ती का मैदान' होता है, का धार्मिक संदर्भ में अर्थ होता है – ऋषियों का एक सम्प्रदाय जो धर्म की 'रक्षा' करे। अखाड़ा 'अखंड' शब्द से बना है जिसका अर्थ 'अविभाज्य' होता है। शास्त्रों की शिक्षा के साथ–साथ प्राचीन काल में ऋषि–मुनि युद्ध भी सीखते थे। सभी साधुओं, संतों और अघोरियों में से विभिन्न अखाड़ों से संबंधित 'नागा साधु' कुंभ मेले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे उत्साह से कुंभ मेले में गायन और नृत्य करते हैं, जिसे 'पेशवाई' कहा जाता है, जिसके बाद वे स्नान की रस्में शुरू करते हैं।

धर्मध्वजा

कुंभ मेला अखाड़ों की धर्मध्वजा की स्थापना के साथ शुरू होता है। धर्मध्वजा के लिए वन देवता की पूजा के बाद जंगल से पूर्व–चिन्हित पेड़ों की बड़ी शाखाओं को कुंभ मेले में लाया जाता है और 13 मुख्य अखाड़ों को फहराने के लिए दिया जाता है। प्रत्येक कुंभ मेले में साधु–संन्यासियों द्वारा अखाड़ों में धर्मध्वजा की स्थापना एक बड़ा समारोह होता है।

2021 के हरिद्वार कुंभ में मेला प्रशासन ने अखाड़ों के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर देहरादून के पास के जंगलों से पहले से चिन्हित किए गए पेड़ों से लकड़ी इक्कट्ठी की। सभी नियमों का पालन करते हुए लकड़ी को काटा गया और पूरे धार्मिक संस्कार के साथ व कड़ी सुरक्षा के बीच अखाड़ों को ध्वजा की छड़ें सौंपी गईं।

धर्मध्वजा सभी अखाड़ों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि धर्मध्वजा की स्थापना के साथ ही विभिन्न अखाड़ों में कुंभ मेला शुरू हो जाता है। यह आमतौर पर कुंभ मेला प्रशासन के लिए एक बड़ी राहत होती है क्योंकि धर्मध्वजा के लिए जंगलों से ध्वज का दण्ड लाना एक बड़ी चुनौती का काम है।

इसके तहत संतों को ध्वज दीक्षा दी जाती है और वे धर्म और राष्ट्र की रक्षा का संकल्प लेते हैं।

पेशवाई

'पेशवाई' कुंभ मेले में नागा साधुओं सहित सभी मुख्य अखाड़ों का शाही जुलूस और कुंभ मेले में विभिन्न अखाड़ों के आगमन का प्रतीक होता है। कुंभ मेले के सभी प्रमुख उत्सवों में पेशवाई का महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न अखाड़ों के नागा साधुओं के भव्य जुलूस को 2021 के हरिद्वार कुंभ में प्रवेश करते देखना एक सुंदर दृश्य था। यह जुलूस हाथी और घोड़ों पर विधिवत तरीके से और धूमधाम से निकला था। इस जुलूस के दौरान साधुओं ने तलवारों से कलाबाजी कौशल और अपनी मार्शल आर्ट का अनूठा प्रदर्शन किया।

BLUE LAGOON

इसके अलावा, पेशवाई को कुंभ मेले में शाही स्नान के लिए जाने वाले संतों के अखाड़ों से जुड़े भव्य जुलूस के लिए भी जाना जाता है। अखाड़ों के संत जब घोड़ागाड़ियों, हाथियों और रथों पर सवार होकर स्नान के लिए निकलते हैं, तो उनका स्वागत और दर्शन करने के लिए भारी भीड़ जमा होती है।

पेशवाई कुंभ मेले के दौरान अखाड़ों का एक महत्वपूर्ण और प्राचीन अनुष्ठान है और आचार्य महामंडलेश्वर सहित सभी संत इसमें भाग लेते हैं।

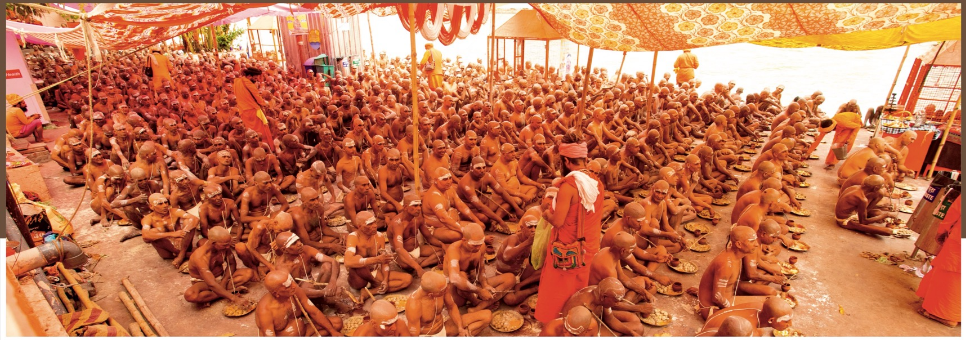

दीक्षा

कुंभ मेले में स्थापित धर्मध्वजा के तहत नए संतों की दीक्षा होती है। दीक्षा प्राप्त करने के बाद, संत अपने गुरु की अनुमति से भारत की तीर्थयात्रा पर जाते हैं। 2021 के हरिद्वार कुंभ के दौरान बड़ी संख्या में संतों ने अपने अखाड़ों के गुरुओं के साथ कुंभ मेले में पहुँचकर दीक्षा ग्रहण की। वैदिक अनुष्ठानों के अनुसार, सभी नए ऋषि दीक्षा लेने के बाद एक संन्यासी के जीवन में लीन हो जाते हैं।

SHAHI SNAAN

शाही स्नान

कुंभ मेले में शुभ दिनों पर पवित्र नदी में अखाड़ों के संतों व तपस्वियों के स्नान को 'शाही स्नान' कहा जाता है। शाही स्नान के जुलूस के दौरान अखाड़े और उनके शिष्य अपनी ताकत और भव्यता दिखाते हैं। अखाड़े अपने शिष्यों के साथ एक सेना की तरह चलते हैं, इसलिए इसे शाही स्नान कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि कुंभ के दौरान शाही स्नान अमरत्व की ओर ले जाता है।

माना जाता है कि कुंभ मेले में शाही स्नान की परंपरा 14वीं शताब्दी से शुरू हुई थी। कुंभ मेला शुरू होने के बाद पहला स्नान अखाड़ों के संतों द्वारा अपने निर्धारित क्रम में किया जाता है। पवित्र डुबकी लगाने से पहले अखाड़ों के संत बड़े धूमधाम और जुलूस के साथ घाट पर पहुँचते हैं। सबसे पहले अखाड़ों के सभी संत पवित्र स्नान करते हैं, जिसके बाद आम लोग आते हैं।

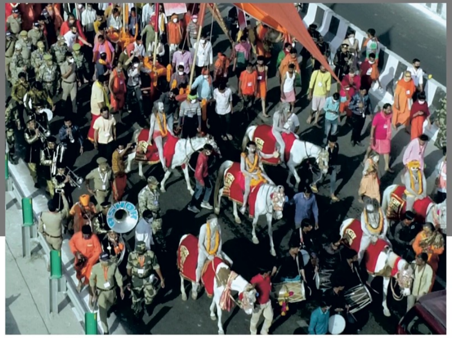

2021 के हरिद्वार कुंभ में संतों और उनके शिष्यों के अखाड़ों को शाही स्नान के लिए हर की पौड़ी जाते हुए देखना मंत्रमुग्ध कर देने वाला दृश्य था। ढोल, ताशों और नगाड़ों के संगीत के साथ संतों को ट्रैक्टर, ट्रॉली व रथों पर सवार होकर आते देखा जा सकता था। हजारों नग्न नागा साधुओं को माला पहने और शरीर पर पवित्र राख लगाए चमचमाती तलवारों व अन्य हथियारों और झण्डे लिए 'हर हर महादेव' तथा 'हर हर गंगे' जैसे नारे लगाते हुए देखना एक भव्य दृश्य था।

साधु–संतों के शाही स्नान के बाद, अन्य श्रद्धालु और भक्त सदियों पुरानी मान्यताओं के अनुसार अपने पापों को धोने के लिए गंगा नदी में डुबकी लगाते हैं।

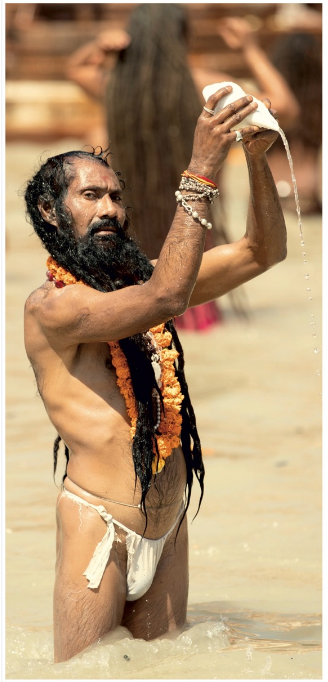

2021 के हरिद्वार कुंभ में शाही स्नान की तिथियाँ

पहला शाही स्नान	11 मार्च 2021, महाशिवरात्रि
महाशिवरात्रि :	पृथ्वी पर गंगा की उपस्थिति का श्रेय भगवान शिव को दिया जाता है, जिन्होंने उसे स्वर्ग से उतरते समय अपनी गुँथी हुई जटाओं में असाधारण बल के साथ बाँध लिया था। इस दिन का पवित्र स्नान एक अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव माना जाता है।

दूसरा शाही स्नान	12 अप्रैल 2021, सोमवती अमावस्या
सोमवती अमावस्या :	सोमवती अमावस्या के दिन गंगा स्नान का विशेष महत्व है। ऐसा माना जाता है कि चंद्रमा जल को प्रभावित करता है, और अमावस्या पर जल व सोमरस की प्राप्ति को अमृत माना गया है।

तीसरा शाही स्नान	14 अप्रैल 2021, मेष संक्रांति और बैसाखी
मेष संक्रांति :	इस शुभ दिन पर नदियों का जल अमृत में बदल जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, इस दिन गंगा में डुबकी लगाने से कई जन्मों के पापों का नाश होता है।

चौथा शाही स्नान	27 अप्रैल, 2021, चैत्र पूर्णिमा
चैत्र पूर्णिमा :	यह पवित्र गंगा में स्नान करने के लिए सबसे शुभ दिनों में से एक माना जाता है और ये 'अमृत योग' के नाम से भी लोकप्रिय है। चौथे शाही स्नान और अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के दिशानिर्देशों के बाद हरिद्वार में महाकुंभ 2021 संपन्न हुआ।

HOLI OF FLOWERS

फूलों की होली

कुंभ मेले की शुरुआत में भगवान शिव, भगवान विष्णु, भगवान कृष्ण और पवित्र गंगा की पूजा करने के बाद, संतों और श्रद्धालुओं ने उत्सव मनाने के लिए फूलों से होली खेलकर वातावरण में चार चाँद लगाए। पंचायती निरंजनी अखाड़े ने एक शानदार रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें पूरे उत्तराखंड के कलाकारों ने लोकगीतों पर प्रस्तुतियाँ दी।

सभी संतों द्वारा परंपरा के अनुसार एक दूसरे पर गुलाल और रंग लगाकर होली खेली जाती है, जिससे कुंभ मेले की शुरुआत होती है। हालाँकि, कोविड महामारी को देखते हुए कुंभ मेला प्रशासन और संत अखाड़ा परिषद ने रंगों और गुलाल से बचने का निर्णय किया, जिससे होली का एक नया व उत्कृष्ट रूप सामने आया – 'फूलों की होली'।

कुंभ मेला प्रशासन के संतों, भक्तों और अधिकारियों ने मिलकर होली खेली और पूरे क्षेत्र को गुलाब की पंखुड़ियों से रंग दिया। यह एक दिव्य दृश्य था, जिसमें हर कोई गुलाब की पंखुड़ियों की मंत्रमुग्ध कर देने वाली बौछार के बीच लोकगीतों पर थिरक रहा था।

07

आस्था के स्तंभ

भारत में आस्था और भक्ति की जड़ें बहुत गहरी हैं। लाखों भक्त वर्षों से कुंभ मेले में शामिल हो रहे हैं और 2021 का हरिद्वार कुंभ मेला भी कोई अपवाद नहीं था। गंगा नदी के किनारे घाटों पर संतों और श्रद्धालुओं की भीड़ लगी हुई थी, जो एक दृढ़ विश्वास के साथ माँ गंगा का आशीर्वाद लेने के लिए आनंदपूर्वक पवित्र स्नान कर रहे थे।

कुंभ मेले में भ्रमण करना आँखों के लिए आनंद की अनुभूति थी। राख में लिपटे हुए उलझी हुई जटाओं वाले संत ध्यान में मग्न थे। कहीं कहीं साधुओं को छोटे शिविरों के बाहर अग्नि जलाकर अफीम (भाँग से बना एक नशीला पदार्थ) का सेवन करते हुए भी देखा जा सकता था।

हर जगह श्रद्धालुओं के जत्थे के जत्थे घूमते हुए देखे जा सकते थे – गाँव के साधारण लोगों से लेकर रंग–बिरंगी साड़ियों और पारंपरिक कपड़ों में चेहरे और सिर को साड़ी के पल्लू से ढँकी हुई महिलाओं से लेकर अपने बड़ों की पीठ पर बैठे हुए छोटे बच्चों और श्रद्धा से भरे बुजुर्गों के चेहरों तक – मेले का ये दृश्य किसी आध्यात्मिक यात्रा से कम नहीं था। भारत के विभिन्न हिस्सों से आए जिज्ञासु पर्यटकों की एक कतार थी। कुछ ने अपना पारंपरिक परिधान पहना हुआ था, तो कुछ ने प्रचलित फैशनेबल कपड़े पहने हुए थे। यहाँ तक कि विदेशी पर्यटक भी बड़ी संख्या में थे – सभी या तो शांति और ज्ञान की तलाश में, या उत्साह का साक्षी बनने, या दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समारोह का हिस्सा बनने आए थे।

मेले में आने वालों की संख्या, शारीरिक बनावट, भाषा, संस्कृति और जाति की विविधता के संदर्भ में भी कुंभ अत्यंत विशिष्ट है। नागा साधुओं से लेकर वृद्ध श्रद्धालुओं, छोटे बच्चों, विदेशी पर्यटकों और जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों तक, सबका उद्देश्य कुंभ मेले की दिव्यता का अनुभव करना है।

कुंभ मेले में आने वाला जनसमूह उतना ही विविध है जितना कोई कल्पना कर सकता है – किंतु सभी अटूट विश्वास के अटल बंधन से एक साथ बंधे हैं।

साधु और साध्वी

साधु–साध्वी सनातन हिन्दू धर्म में बहुत श्रद्धेय माने जाते हैं। माना जाता है कि कुंभ मेला न केवल विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समारोह है, बल्कि साधुओं और साध्वियों की सबसे बड़ी सभा भी है। साधु और साध्वी ऐसे पुरुष व महिलाएँ होते हैं जो संसार का परित्याग करके अपना परिवार छोड़ देते हैं और सनातन धर्म की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं।

साधु का मूल अर्थ होता है – ऐसा व्यक्ति जो सदाचारी, गुणी और ईश्वर के प्रति समर्पित हो। कुंभ मेले में आने वाले साधु सांसारिक माया से दूर और त्याग व आध्यात्मिक प्रकृति के होते हैं, जो दूसरों के कल्याण के लिए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। साधुओं ने अपने जीवन के दौरान क्रोध पर विजय पाने, बुराइयों को त्यागने और लोगों के कल्याण के लिए अपना जीवन जीने की क्षमता विकसित की होती है।

साध्वी का अर्थ सरल स्वभाव और शुद्ध मन की एक सिद्ध महिला होता है। भौतिक संसार का त्याग कर अध्यात्म और कठोर ब्रह्मचर्य के मार्ग पर चलने पर साध्वी की उपाधि प्राप्त होती है। कुंभ मेले में साध्वियों को देखने पर लोगों की उनके सामने स्वाभाविक रूप से सिर झुकाने की प्रवृत्ति होती है। सहजता, गंभीरता, स्नेह, मुस्कान और दया साध्वी की कुछ विशेषताएँ हैं।

NAGA SADHUS

नागा साधु

रहस्यपूर्ण नागा साधुओं की मंत्रमुग्ध कर देने वाली आभा का अनुभव किए बिना कुंभ मेले की यात्रा अधूरी मानी जाएगी। वास्तव में नागा साधु वे लोग होते हैं जिन्होंने एक दक्ष तपस्वी जीवन जीने के लिए सभी सांसारिक भौतिक सुखों और इच्छाओं को त्याग दिया है। वे कपड़ों की अवधारणा में विश्वास नहीं करते और उन्हें कुंभ मेले में नग्न घूमते देखा जा सकता है। ब्रह्मचर्य का पालन करने का प्रण लिए हुए उनके राख से ढँके शरीर और उलझी हुई जटाएँ आगंतुकों के लिए भयप्रद और दिलचस्प हो सकती हैं, जो बिना किसी कामना या इच्छा के जीवन की एक दूसरी झलक भी दिखाते हैं।

नागा साधु शैव (भगवान शिव के अनुयायी) होते हैं और मुख्य रूप से हिमालय, जंगलों व गुफाओं में निवास करते हैं। कुंभ मेला वर्ष का एकमात्र समय होता है जब वे मैदानों में उतरते हैं और इस आयोजन को महत्व देते हैं। दिलचस्प बात यह है कि कुंभ मेले के दौरान ही कोई व्यक्ति नागा साधु बन सकता है। कुंभ मेले के दौरान ही दीक्षा संस्कार होता है और इसमें विभिन्न आयु वर्ग के लोग भाग लेते हैं। कुंभ मेले के दौरान कई महिला नागा साधुओं को भी पवित्र स्नान करते हुए देखा जा सकता है। अपने पुरुष समकक्षों की तरह, महिला नागा साधु भी शरीर, मन और भौतिक सुखों से संबंधित आयामों में संयम का जीवन जीती हैं। पुरुष और स्त्री नागा साधुओं के बीच एकमात्र अंतर यह है कि पुरुष नागा साधुओं के विपरीत महिला नागा साधुओं को नग्न रहने की अनुमति नहीं है और उन्हें पवित्र स्नान करते समय भी स्वयं को पीले कपड़े से ढँकना होता है।

ज्ञान प्राप्ति के बाद नागा साधुओं को कुंभ मेले के दौरान पवित्र जल में पहली पवित्र डुबकी लगाने का सम्मान दिया जाता है।

कल्पवासी

कल्पवासी ऐसे व्यक्ति होते हैं जो कुंभ मेले में लगभग 30 दिन बिताते हैं, और रोजमर्रा के सांसारिक अस्तित्व से दूर होने के लिए एक सरल और न्यूनतर जीवन व्यतीत करते हैं, ताकि जीवन के सही अर्थ को समाहित कर पाएँ। कुंभ मेले के दौरान कल्पवासी सर्वव्यापी होते हैं।

कल्पवासी गंगा नदी के तट पर झोपड़ियों में रहते हैं और जमीन पर सोते हैं। सनातन धर्म में कहा गया है कि गृहस्थ आश्रम में 50 वर्ष पूरे करने के बाद व्यक्ति को कल्पवास का पालन करना चाहिए। कल्पवास की अवधि के दौरान एक व्यक्ति हवन, मंत्रोच्चार, धार्मिक कथाओं का पठन, ध्यान, भजन–कीर्तन और सादा भोजन करते हैं। कुंभ मेले में कल्पवास की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। ऐसा व्यापक रूप से माना जाता है कि जो व्यक्ति सांसारिक भ्रमों को त्यागकर कुंभ मेले में कल्पवास करता है, उसे मोक्ष प्राप्त होता है।

देव डोली

प्राचीन काल से कुंभ मेले के दौरान पवित्र गंगा नदी में उत्तराखंड के विभिन्न शहरों से आने वाली देवी–देवताओं की मूर्तियों को स्नान कराने की परंपरा चली आ रही है। 'देव डोली' की यह परंपरा हरिद्वार में आयोजित कुंभ मेले के लिए काफी अनोखी है। कुंभ मेले में जब उत्तराखंड के स्थानीय देवताओं ने भव्य प्रवेश किया, तो ढोल की थाप और नृत्यों की प्रस्तुतियों के बीच सभी क्षेत्रों के लोग उनके स्वागत के लिए उमड़ पड़े। देव डोली के इस सदियों पुराने रिवाज में ऊर्जा, आस्था और रंगीन जीवंतता बहुत स्पष्ट थी।

हर की पौड़ी स्थित ब्रह्मकुंड में देवताओं की मूर्तियों की पूजा के बाद स्नान विधि आरंभ की जाती है। कुंभ मेले में देव डोली की परंपरा उत्तराखंड की लोक संस्कृति और धार्मिक विरासत को सशक्त करने में सहायक रही है। 2021 के हरिद्वार कुंभ मेले में कुमाऊं और गढ़वाल क्षेत्र की देवी–देवताओं की रंग–बिरंगी मूर्तियों को स्नान के लिए उतरते देखना उत्साहजनक था, जिससे इस उत्सव का उत्साह और भी बढ़ गया। दिलचस्प बात यह है कि देश में जिन चार स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है, उनमें से देव–डोली की प्रथा हरिद्वार में ही मनाई जाती है।

आरती

गंगा आरती का अपना ही महत्व है। सनातन धर्म में गंगा को माँ माना गया है और माँ से बढ़कर कोई पूजनीय नहीं है। ऐसा माना जाता है कि कुंभ मेले के दौरान गंगा आरती की एक झलक मनोकामनाओं को पूर्ण करती है। सनातन मान्यता के अनुसार, गंगा आरती में सम्मिलित होने से व्यक्ति पर से अकाल मृत्यु का संकट समाप्त हो जाता है और शरीर में निवास करने वाली अनिष्ट शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं।

कुंभ मेला समारोह के दौरान, हर की पौड़ी में दिन में दो बार गंगा आरती की जाती है। भक्त प्रतिदिन बड़ी संख्या में इस स्थान पर आते हैं और पवित्र गंगा नदी की पूजा करते हैं।

यह आरती सुबह और शाम को की जाती है, जिसमें बटुक (पुजारी) बड़े उत्साह के साथ स्तुति करते हैं, और विशेष रूप से बनाए गए दीपकों को पकड़कर पवित्र गंगा नदी की आराधना करते हैं। यह आरती नदी के सामने खड़े होकर की जाती है। माँ गंगा की स्तुति में गीतों का जाप करते हुए पुजारी दक्षिणावर्त क्रम में दीपक जलाकर आरती करते हैं । यह क्रिया इस दर्शन पर आधारित है कि दीपक देवताओं की शक्ति प्राप्त करते हैं। आरती के पश्चात, भक्तजन अपनी हथेलियों को लौ पर रखते हैं और देवी की शुद्धि व आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अपनी हथेलियाँ अपने माथे तक ले जाते हैं।

पुजारियों द्वारा थामे गए दीपक पंचतत्व के महत्व का प्रतीक हैं। एक ओर तो दीपों की ज्वाला पवित्र गंगा नदी की लहरों का प्रतीक हैं, वहीं दूसरी ओर दीपकों से निकलने वाला पवित्र धुँआ पृथ्वी पर स्वर्ग की गूढ़ आध्यात्मिक भूमिका निभाते हुए प्रतीत होते हैं।

दीप दान

कुंभ मेले में हर की पौड़ी में होने वाली दिव्य आरती की महिमा बेजोड़ है। मान्यता के अनुसार, आरती के बाद हजारों लोग इस धारणा के साथ गंगा में दीप जलाते हैं कि स्नान करने के बाद गंगा में दीपदान करने से अनंत गुण प्राप्त होते हैं। दीपक से प्रकाशित होने वाले दिव्य प्रकाश से व्यक्ति के भीतर छिपी तामसिक प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है और उसके जीवन में खुशियों का संचार होता है।

कुंभ मेले के दौरान दीपदान बहुत पवित्र महत्व रखता है। पवित्र गंगा नदी के तट पर स्नान करके दीपदान करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है, जिसके फलस्वरूप उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है। दीपदान के समय ब्राह्मणों की उपस्थिति इस संस्कार की गरिमा बढ़ाती है, क्योंकि भक्त उन्हें दान देकर समृद्धि के लिए आशीर्वाद माँगते हैं। मान्यता के अनुसार, गंगा आकाश की ओर बहती है जिससे प्रार्थना पूर्वजों तक पहुँचती है, और इस प्रकार ये ऊर्जाएँ भक्तों को सशक्त करती हैं।

स्नान, मुंडन, दान और तर्पण

प्राचीन पुराणों में वर्णित है कि पवित्र गंगा नदी में स्नान करने से अपार धार्मिक लाभों की प्राप्ति होती है। पुराणों में कहा गया है कि जो लोग गंगा के तीर्थ में स्नान करते हैं उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है। सनातन धर्मियों का मानना है कि कुंभ मेले में गंगा स्नान करने से व्यक्ति सात जन्मों के पापों का नाश करता है और अपने पूर्वजों समेत मोक्ष प्राप्त करता है।

अश्वमेध सहस्त्राणि वाजवेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूम्या: कुंभस्नानेन तत्फलम।

कुंभ मेले में स्नान करना हजारों अश्वमेध यज्ञों, सैकड़ों वाजपेयी यज्ञों और एक लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से प्राप्त पुण्यों के बराबर है।

हिन्दू धर्म से जुड़े आवश्यक संस्कारों में मुंडन संस्कार सबसे महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है। कुंभ मेले के अवसर पर मुंडन संस्कार का महत्व सर्वोच्च माना जाता है। इसलिए हिन्दू परिवार अपने नवजात शिशुओं और बच्चों को गंगा के तट पर ले जाकर ये संकार करते हैं। ऐसा माना जाता है कि बच्चों के जन्म के बाद उनका सिर मुंडवाना किसी भी अशुभ शक्ति से उनकी रक्षा करता है और उनके बौद्धिक विकास की शुरुआत करता है।

इसके अलावा, ऐसा भी माना जाता है कि जब कोई तीर्थ पर पहुँचता है और पवित्र गंगा नदी में डुबकी लगाता है, तो भक्त द्वारा किए गए पाप बालों के स्थान पर जमा हो जाते हैं और इसलिए उसे मुंडन की आवश्यकता होती है। आमतौर पर पुरुष तीर्थयात्री मुंडन संस्कार से गुजरते हैं, जबकि महिलाएँ केवल अपने बालों का एक हिस्सा कटवाती हैं। मुंडन संस्कार के बाद विधिवत स्नान के साथ–साथ स्तुतियों का जाप भी किया जाता है।

'तर्पण' कुश घास के साथ पितरों को जल चढ़ाने का एक विस्तृत रूप है। हिन्दुओं का मानना है कि पूर्वजों की आत्माएं पवित्र स्थानों में निवास करती हैं और यदि इन स्थानों पर पवित्र जल चढ़ाया जाए तो वे प्रसन्न हो जाते हैं।

जीवन शैली : ब्रह्मचर्य, उपदेश / प्रवचन

ब्रह्मचर्य का पालन करना सनातन परंपरा का एक अभिन्न अंग रहा है। कुंभ मेले के दौरान ऐसे ब्रह्मचारियों की एक झलक पाना दिव्य होता है। ब्रह्मचारी का रहन–सहन और खान–पान बिल्कुल अलग होता है। कुंभ मेला ऐसे ब्रह्मचारियों के दर्शन करने का अवसर है जो तार्किक रूप से प्रभावी और मानसिक रूप से बहुत मजबूत होते हैं, जिससे उनके चारों ओर एक तीव्र आभा उत्पन्न होती है।

कुंभ मेले के दौरान, संतों, संन्यासियों और आध्यात्मिक पुरुषों के प्रवचनों को सुनने के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में भक्त इकट्ठा होते हैं। गंगा तट के पास स्थापित विशाल आश्रमों और पंडालों में संत भगवद्गीता, महाभारत, रामचरितमानस, पुराण और हिन्दू धर्म से संबंधित पौराणिक कथाओं पर उपदेश देते हैं। संतों के उपदेश भक्तों में ऊर्जा और आध्यात्मिक उमंग का संचार करते हैं।

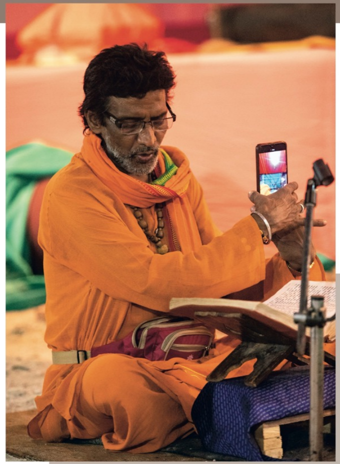

वंशावली पुरोहित

वंशावली पुरोहित वे पुजारी होते हैं जो हरिद्वार कुंभ मेले में तीर्थयात्रा करने वाले व्यक्ति के पूर्वजों का लेखा–जोखा रखते हैं। इस जानकारी को रजिस्टरों में लिखा जाता है, और वैज्ञानिक आधार पर उचित प्रामाणिकता के साथ संकलित किया जाता है। इन अभिलेखों को हरिद्वार के पंडों की पीढ़ियों द्वारा दशकों से संरक्षित किया गया है। सदियों से एकत्रित वंशावली का विवरण देखने के लिए दुनिया भर से संग्रहालय प्रबंधक हरिद्वार कुंभ में आते हैं। वंशावली पुरोहितों के लगभग 2,500 परिवार हैं जिन्होंने 200 से अधिक वर्षों में फैले इस इतिहास को संकलित किया है। इन अभिलेखों को हर बार शहर आने पर अपडेट किया जाता है, और ये रिकॉर्ड्स भारत के विशाल वंश–वृक्षों का भंडार हैं।

शहीदों के लिए यज्ञ

देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले जवानों की स्मृति में महायज्ञ का आयोजन किया गया। 12 अप्रैल से 26 अप्रैल 2021 तक प्रतिदिन बैरागी शिविर में बने शहीद नगर स्थल पर तंबू के ऊपर तिरंगा लहराकर विष्णु यज्ञ किया गया। यज्ञ के आरंभ और अंत में राष्ट्रगान भी गाया गया।

2021 के हरिद्वार कुंभ मेले में शहीदों के परिवारों के कई सदस्य इस उद्देश्य से इस यज्ञ का हिस्सा बने ताकि वे दिवंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना कर सकें और बलिदानियों की आत्मा को मोक्ष प्राप्त हो, तथा इस विशेष शिविर में आने वाले लोग शहीद सैनिकों के बलिदान को समझ सकें।

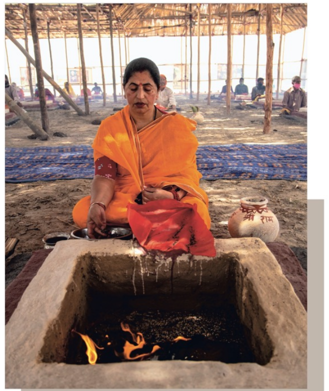

08

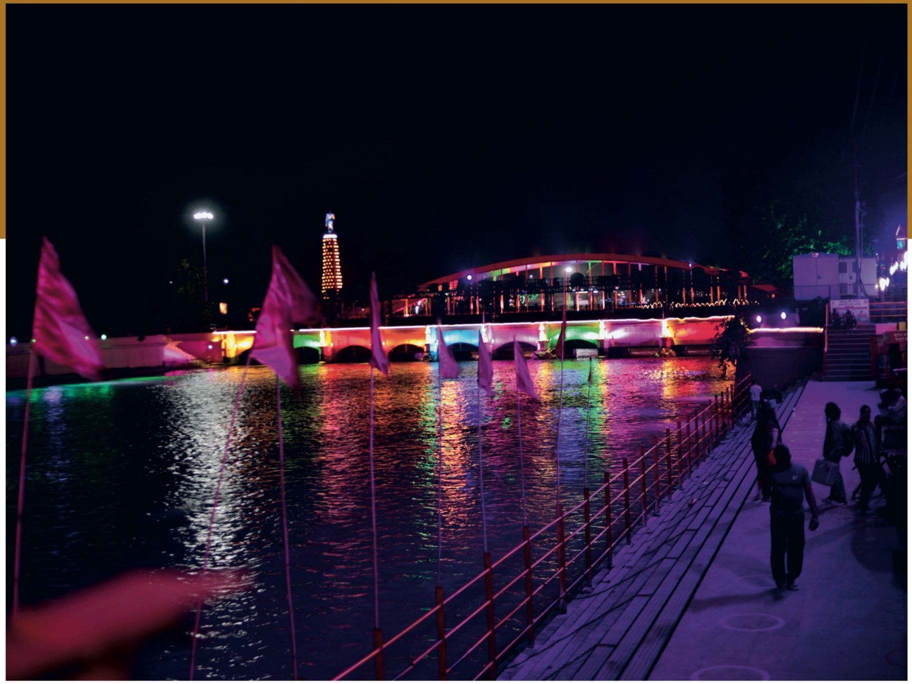

हरिद्वार कुंभ 2021: अमृत का अमर पात्र

भारत और दुनिया भर की विभिन्न जातीयताओं का एक शांतिपूर्ण समागम रहा '2021 का हरिद्वार कुंभ मेला' लम्बे समय तक कला, संस्कृति और आध्यात्मिकता के संगम के रूप में प्रत्यक्ष रूप से याद किया जाएगा। प्रचण्ड महामारी के बावजूद, अपार जनसमूह का उत्साह और ऑडियो (Audio) और विजुअल (Visual) माध्यम से विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन इसके अभिन्न अंग थे! कोरोना महामारी के चलते, 2021 कुंभ मेले की अवधि को सीमित करके केवल 30 दिन (1 अप्रैल से 30 अप्रैल तक) का कर दिया गया था।

भारत में प्राचीन काल से ही कुंभ मेले का आयोजन होता आ रहा है जिसका उल्लेख भारत के कई प्राचीन ग्रंथों में किया गया है। हरिद्वार कुम्भ 2021 के दौरान मेला प्रशासन का भरसक प्रयास, अनुकरणीय प्रबंधन और अंत में संपूर्ण मेला मशीनरी की कड़ी मेहनत ने सुनिश्चित किया कि कोई अप्रिय घटना न घटे। और आखिर में सबसे महत्वपूर्ण चीज, कुम्भ मेले के लिए अपार भक्ति, जो भारतीय सनातन धर्म की जड़ों की गहराईयों में शामिल है, ने सुनिश्चित किया कि यह एक सुखद नोट पर समाप्त हो।

कुंभ मेला भारतीय दर्शन, आध्यात्मिकता, चिंतन और धार्मिक विश्वासों को प्रदर्शित करने वाला आकर्षण का सबसे बड़ा केन्द्र रहा है। सनातन धर्म को मानने वाले लोग कुंभ मेले में पहुँचने का हर संभव प्रयास करते हैं। कुंभ मेला प्रशासन ने संतों, अखाड़ों, धार्मिक संगठनों और तीर्थयात्रियों के लिए हरिद्वार में उच्च स्तरीय सुविधाएँ मुहैया कराई थीं। एक वैश्विक महामारी के दौरान, प्रशासन ने कुंभ मेले का कुशलतापूर्वक आयोजन करके एक महान उदाहरण स्थापित किया। कुंभ मेला क्षेत्र में चाहे अखाड़ों के शिविर हों या तीर्थयात्रियों के तंबू, संतों की भव्य पेशवाई हो या उनके शाही स्नान, हरिद्वार के प्राचीन मंदिर हों या शहर के मुख्य बाजार, गंगा के घाट हों या पर्यटकों के ठहरने के स्थान, सुरक्षा व्यवस्था हो या कोरोना संबंधी नियम – पवित्र कुंभ मेले की व्यवस्था स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। जहाँ विदेशी सैलानी हरिद्वार की प्राचीन नगरी की भव्यता देख अभिभूत हो गए, वहीं देश के कोने–कोने से 2021 के हरिद्वार कुंभ में पहुँचे श्रद्धालुओं ने शानदार व्यवस्थाओं को देख उत्तराखंड सरकार की प्रशंसा की।

अक्सर मेले की चमक–दमक में प्रशासनिक तंत्र की भूमिका को भुला दिया जाता है, हालाँकि यह इस विशुद्ध योजना और महीनों की कड़ी मेहनत का ही कमाल था जिसने कुंभ मेले को पृथ्वी पर मानवता का सबसे बड़ा और शांतिपूर्ण समारोह बनाने में मदद की।

2021 का हरिद्वार कुंभ योजनाकारों, नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और पर्यवेक्षकों के लिए विस्मयकारी रहेगा कि कैसे 30 दिनों तक लाखों आगंतुकों को समायोजित करने के लिए इतने कम समय में कुंभ मेले के लिए एक अस्थायी शहर बनाया गया था, और कैसे इसकी अवधारणा, निर्माण, विकास और रखरखाव तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की छोटी–छोटी जरूरतों को पूरा करने वाली प्रशासनिक प्रणाली के साथ किया गया।